विश्व समभाव दिवस

—7 सितम्बर, 2019—

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-26-0

प्रथम संस्करण
जुलाई, 2020

विश्व
समभाव दिवस

—7 सितम्बर, 2019—

Invitation

SATYUG DARSHAN TRUST
www.satyugdarshantrust.org

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

मानवता अपनाओ, सुखी हो जाओ

निमंत्रण

खुशख़बरी, खुशख़बरी, खुशख़बरी

आनन्द की बेला आ गई
क्योंकि

दिनाँक 7 सितम्बर 2019

विश्व समभाव दिवस के शुभावसर पर
सम्पन्न होने जा रहा है

मानव के नैतिक व चारित्रिक उत्थान हेतु
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि०) द्वारा वैश्विक स्तर पर
कराए जा रहे

5th अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड
का
पुरस्कार वितरण समारोह

इस शुभावसर पर आप सब अपने परिवारजनों,
सगे-सम्बन्धियों सहित
फरीदाबाद भूपानी-लालपुर रोड स्थित
सतयुग दर्शन वसुंधरा
के विशाल सभागार में सादर आमंत्रित हैं।

सभी से निवेदन है कि पुरस्कार वितरण का आनन्द
उठाने के साथ-साथ
समभाव-समदृष्टि तथा मानवता के विषय में उचित
मार्गदर्शन प्राप्त करने
हेतु

प्रातः साढ़े नौ बजे तक अपना स्थान अवश्य ग्रहण कर लें।

आने से पूर्व अपना नाम humanityolympiad.org/register
पर रजिस्टर करना न भूलें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: +91 8968814154
या फिर मेल करें: info@humanityolympiad.org

सज्जनों अभी भी समय बाकी है। यदि आप चाहें तो आप भी वेबसाइट www.humanityolympiad.org पर जाकर इस परीक्षा को दिनाँक 2 सितम्बर तक सम्पन्न कर सकते हैं और एक अच्छा व नेक इन्सान बनने के साथ-साथ आकर्षक इनाम भी जीत सकते हैं।

45 lacs+ Attempts

2500+ Schools

मानवता के लिए जियो, मानवता के लिए कार्य करो,
मानवता पर अपना सर्वस्व वार दो।

विश्व समभाव दिवस - 7 सितम्बर

SATYUG DARSHAN TRUST
www.satyugdarshantrust.org

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

5th International Humanity Olympiad

Prize Distribution Ceremony

7 September

2019

9:30 am onwards

Auditorium
Satyug Darshan Vasundhra
Bhupani-Lalpur Road, Faridabad.

It is an honor to invite you along with your family to the ***'World Equanimity Day'.***

Know that, each one of us has the requisite skills to remain steadfast on the path of righteousness in truthful and selfless manner.

Kindly grace the occasion with your benign presence, and join hands in enlightening the entire human race to live life peacefully and harmoniously.

Let us pledge to achieve this challenging mission and say come what may, we all will

Live for Humanity
Work for Humanity
Die for Humanity

Please register for this event at: humanityolympiad.org/register
For more details call us at: +91 8968814154 or
mail us at: info@humanityolympiad.org

While there is time till 2nd September, why don't you test your Humanity Quotient by taking this Olympiad at - ***www.humanityolympiad.org***
You never know, in the process of becoming a good human being you might win a big prize!

45 lacs+ Attempts

2500+ Schools

WORLD EQUANIMITY DAY-7 SEPTEMBER

सभाव
सवे

पहला एंकर :- आज विश्व समभाव दिवस पर हम उपस्थित सभी माननीय अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं। आज के शुभ दिवस को पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाने के लिए इस सभागार में हमारे बीच उपस्थित हैं मान्यवर अतिथि महोदय पदमश्री अवार्ड से नवाजी गई, सुश्री शोवना नारायण जी, कर्नल वी0 एन0 थापर जी, देश के विभिन्न स्कूलों, कालेजों के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण, छात्र-छात्राएँ व विभिन्न शहरों से आए ट्रस्ट के सदस्य।

दूसरा एंकरः- एक बार फिर हम आप सब का इस पावन धरा वसुन्धरा पधारने पर जोरदार तालियों के साथ स्वागत करते हैं और समभाव दिवस की बहुत-बहुत बधाई देते हुए, मृतलोक पर फतह पा जीवन विजयी होने के लिए दिलचस्पी में आकर, अपने साथ मिलकर यह बोलने की प्रार्थना करते हैंः-

समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह, समभाव दी होसवे फतह

हे ख़ुदा के नूरो समभाव समदृष्टि अपना कर
एकता में आ जाओ और एकता में आकर
अपने नूरानी प्रकाश से सारे विश्व को प्रकाशित कर
भारत माता को हर्षा दो
अब सब मिलकर बोलो
भारत माता की जय, भारत माता की जय भारत माता की जय

हे भक्त शिरोमणि महाबीर जी के
द्वारे के वीर सुपुत्रो!
उठो ! जाग्रति में आओ !
और उनकी युक्ति अनुसार
समभाव समदृष्टि का परचम
इस संसार में बुलंद कर दो।

समभाव
दी
SATYUG DARSHAN TRUST

इस संदर्भ में सजनों जानो कि जहाँ सम सर्वव्यापक भगवान का प्रतीक है वहीं समभाव राग-द्वेष का उपशमन कर, जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी, दुःख-सुख, विजय-पराजय, लाभ-हानि आदि में समरस रहने का भाव है तथा समदृष्टि–सबको सम या समान दृष्टि से देखने की अवस्था है। चूंकि विभिन्न धर्म ग्रन्थों के अनुसार एक मानव, समभाव नज़रों में कर समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने पर ही विचार, सत्-जबान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था में स्थिर बने रहते हुए अपने जीवन का महान प्रयोजन सहजता व सरलता से सिद्ध कर सकता है इसलिए समभाव समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन की अपार महानता है। इसी महानता को समझते हुए आओ सजनों मिल कर बोलते हैंः-

समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाएंगे;
जगत विजयी हो जायेंगे।
समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाएंगे;
जगत विजयी हो जायेंगे।
समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाएंगे;
जगत विजयी हो जायेंगे।

सजनों याद रखो जो कथनी से कहा है, उसको करनी में उतारना है ताकि हमारी कथनी और करनी सबसे पहले सम-अवस्था में सधकर, एक हो जाये और हमारे अन्दर सर्व एकात्मा का भाव पनपे। ऐसा करने हेतु सजनों सर्वप्रथम हमें मानना होगा किः-

हम नश्वर शरीर नहीं अपितु अजर अमर आत्मा हैं।
हम नश्वर शरीर नहीं अपितु अजर अमर आत्मा हैं।
हम नश्वर शरीर नहीं अपितु अजर अमर आत्मा हैं।

अर्थात् हम वह वस्तु हैं जिसे हथियार काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पवन उड़ा नहीं सकती व पानी बहा या गला नहीं सकता। हम तो अजर अमर हैं ।

इस अजर-अमर अवस्था को पहचानने हेतु सजनों हमें अपना स्वाभाविक रूप आत्मीयता अनुरूप ढालना होगा। इसके लिए सर्वप्रथम हमें विकार वृत्तियों को त्यागना होगा व सद्-वृत्तियों को अपनाना होगा। आओ ऐसा करने हेतु अब यह बोलकर दृढ़ संकल्प लेते हैंः-

कामना छोड़, निष्काम हो जाएंगे।
कामना छोड़, निष्काम हो जाएंगे।
कामना छोड़, निष्काम हो जाएंगे।

क्रोध छोड़, शान्त हो जाएंगे।
क्रोध छोड़, शान्त हो जाएंगे।
क्रोध छोड़, शान्त हो जाएंगे।

लोभ छोड़, सन्तोष को पाएंगे।
लोभ छोड़, सन्तोष को पाएंगे।
लोभ छोड़, सन्तोष को पाएंगे।

मोह छोड़, निर्लेप हो जाएंगे।
मोह छोड़, निर्लेप हो जाएंगे।
मोह छोड़, निर्लेप हो जाएंगे।

अहंकारता छोड़, सजनता अपनाएंगे।
अहंकारता छोड़, सजनता अपनाएंगे।
अहंकारता छोड़, सजनता अपनाएंगे।

इस प्रकार

आत्मिक स्वभावों के स्वरूप में ढल,
सजन पुरुष बन जाएंगे।
आत्मिक स्वभावों के स्वरूप में ढल,
सजन पुरुष बन जाएंगे।
आत्मिक स्वभावों के स्वरूप में ढल,
सजन पुरुष बन जाएंगे।

और

कलुकाल से छुटकारा पा, सतवस्तु में प्रवेश कर जाएंगे
कलुकाल से छुटकारा पा, सतवस्तु में प्रवेश कर जाएंगे
कलुकाल से छुटकारा पा, सतवस्तु में प्रवेश कर जाएंगे

कलुकाल से छुटकारा पा,
सतवस्तु में प्रवेश कर जाएंगे
कलुकाल से छुटकारा पा, सतवस्तु में प्रवेश कर जाएंगे

कामना छोड़, निष्काम हो जाएंगे
कामना छोड़, निष्काम हो जाएंगे।

क्रोध छोड़,
शान्त हो
जाएंगे।
लोभ छोड़,
सन्तोष को
पाएंगे।

पहला एंकरः- भई वाह ! यह तो विश्व समभाव दिवस के शुभ अवसर पर लिया गया अति ही शुभ संकल्प है। इसी संदर्भ में अब हम कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सभी उपस्थित सजनों से प्रार्थना करते हैं कि वे मन में छाया अज्ञान अंधकार दूर भगा, उसे सत्य के प्रकाश से आलोकित करने के लिए सज्ञान का दीप प्रज्वलित करने हेतु तत्पर हो जाएँ। इस शुभ कार्य की सिद्धि हेतु हम सतयुग दर्शन ट्रस्ट के मार्गदर्शक श्री सजन जी से निवेदन करते हैं कि वे सद्ज्ञान के प्रतीक इस दीपक को प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करें:-

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान (सात बार)

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र, प्रियतम सर्वव्यापक है।
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

दूसरा एंकरः- कार्यक्रम को आगे बढ़ाने से पूर्व सजनों हम आपको सात सितम्बर इस विशेष तिथि को ही समभाव दिवस के रूप में मनाने के विषय में, इस दिवस की महत्ता से अवगत कराते हुए बताना चाहेंगे कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सातवीं सितम्बर, उन्नीस सौ बवन्झा, रविवार, को सतवस्तु के राज की स्थापना हुई थी। तभी से लेकर अब तक हम अपने साथ-साथ कुल मानव जाति को, भक्ति-शक्ति धारण कर अंदर की लंका अर्थात् मन व इन्द्रियों पर फतह पा आत्मविजयी होने का आवाहन् देते हुए, इस दिवस को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ कुछ इस प्रकार गाते हुए मनाते हैं:-

सातवीं सितम्बर उन्नीस सौ बवन्झा

रविवार सतवस्तु दा राज हुन हो गया, वेखसी कुल जहान सतवस्तु दा राज हुन हो गया।।

पहला एंकरः- आइए अब आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि समता ही योग है, यानि, आत्मा-परमात्मा की एक अवस्था का प्रतीक है। समता मूलाधार है - समानता, एकरूपता, सदृश्यता, निष्पक्षता व धीरता का। इससे मन में विषमता नहीं पनपती। इसीलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार समभाव नज़रों में करने पर, मनुष्य के हृदय में, सजन-वृत्ति का विकास होता है, और फिर वह, इसी विचारधारा अनुरूप, सबके साथ समदर्शिता का आचार-व्यवहार करता हुआ, सदा अफुर व आनन्दमय बना रहता है। सजनों आगे जानो कि तभी ही तो वह अपने जीवन में प्रभु आज्ञा अनुसार जो भी करता है वह सर्वहित को ध्यान में रखकर ही करता है और इस प्रकार उस परमार्थी के मन में स्वार्थपरता का भाव कदाचित् नहीं पनपता।

दूसरा एंकरः- अन्य शब्दों में समग्र विश्व के प्रति, जो समभाव अनुरूप नज़रिया रखता है, वह न किसी को प्रिय समझता है न अप्रिय। ऐसा समदर्शी तो, अपने-पराए की भेद-बुद्धि, व द्वन्द्वों से परे हो, अर्थात्, समस्त क्लेशों, पापों व संघर्षों से छुटकारा पा, सर्वथा निराकुल व शांत हो जाता है। इस प्रकार समभाव की साधना को, परिपक्व तभी माना जाता है, जब समग्र विश्व, एकरूपता से दिखाई देता है। सजनों जानो इस प्रकार ब्रह्म भाव हृदय स्थित होने पर वह सहर्ष कह उठता है किः-

सजन हम है सजन तुम हो सजन दृष्टि मान लवो।
सजन मानो सजन जानो, सजन बुद्धि पहचान लवो।।

यहाँ हम यह भी बताना उचित समझते हैं कि वसुन्धरा परिसर में स्थित ध्यान कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि के स्कूल से हर मानव को इसी वृत्ति में ढाल इंसानियत में लाने का विधिवत् प्रयास किया जाता है।

पहला एंकरः- यही नहीं, याद रखो, जिसका मन समभाव में स्थित हो जाता है, वह जीते-जी ही हर शै में, परब्रह्म परमेश्वर का अनुभव कर, संसार पर विजय प्राप्त कर लेता है। इस महत्ता को समझते हुए सजनों अविलम्ब ममत्व बुद्धि से रहित होकर, समभाव अनुरूप जीने की पद्धति को अपनाओ, क्योंकि, इससे भिन्न पद्धति को अपनाने पर, न तो जगत की और न ही जीवन की सार्थकता को प्राप्त करना संभव हो सकता है। यही अभाव फिर मनगढ़ंत व हानिकारक विचारधारा को, अपनाने का हेतु बनता है। सजनों किसी की पकड़ से सत्य-धर्म न छूटे, इसके लिए, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा हैः-

सम मानो सम जानो, सम लवो पहचान, समदृष्टि जानो।
सजनों समभाव समदृष्टि नूं धारण करो, वैरी दुश्मन शत्रु सारे, इक सजन दृष्टि फड़ो।।

दूसरा एंकरः- कहने का तात्पर्य यह है कि जात-पात, ऊँच-नीच आदि के कारण उत्पन्न होने वाली भेद-प्रवृत्ति त्याग दो और समभाव से ओत-प्रोत हो, अविलम्ब सबके साथ सहृदयता से, सजनतापूर्ण व्यवहार करना आरम्भ कर दो। याद रखो, अपने सुख-दुःख के समान, दूसरे के सुख-दुःख का अनुभव करना, मानव जीवन की परम श्रेष्ठ अनुभूति है। यही वास्तव में समता का निर्मल रूप है। समता के इसी निर्मल भाव को अभिव्यक्त करते हुए आओ सजनों अब देखें कि बच्चे हमें क्या संदेश दे रहे हैंः-

मैं सम हूँ,मैं सम हूँ ... मैं सम हूँ ।
मैं सम हूँ,मैं सम हूँ ... मैं सम हूँ ।।

मैं ब्रह्म हूँ ...मैं सम हूँ।
मैं ब्रह्मा दा वी ब्रह्म हूँ ...मैं सम हूँ।।

ओ३म् विच विशेष हूँ ...मैं सम हूँ।
ओ३म् तूं निर्लेप हूँ ...मैं सम हूँ।।

मैं अजर अमर हूँ ...मैं सम हूँ।
न जन्म में हूँ, न मरन में हूँ ...मैं सम हूँ।।

न रोग में हूँ, न सोग में हूँ ...मैं सम हूँ।
न खुशी में हूँ, न ग़मी में हूँ ...मैं सम हूँ।।

न मान में हूँ, न अपमान में हूँ ...मैं सम हूँ।
न अमीरी में हूँ, न गरीबी में हूँ ...मैं सम हूँ।।

मैं अमीरों का भी अमीर हूँ... मैं सम हूँ।
सजनता है स्वभाव मेरा... मैं सम हूँ।।

संतोष-धैर्य मेरा सिंगार है... मैं सम हूँ ।
सच्चाई-धर्म मेरी राह है... मैं सम हूँ ।।

निष्कामता मेरा धर्म है... मैं सम हूँ।
परोपकारता मेरा कर्म है... मैं सम हूँ।।

मैं हिंसा, भय और वैर से मुक्त हूँ... मैं सम हूँ।
मैं तृष्णा, आसक्ति, राग-द्वेष से विमुक्त हूँ... मैं सम हूँ।।

मैं मोह-क्षोभ से रहित हूँ... मैं सम हूँ।
मैं समस्त संघर्षों से ऊपर हूँ... मैं सम हूँ।।

मैं संकल्प-विकल्प रहित हूँ... मैं सम हूँ।
मैं एक ख्याल और एक दृष्टि हूँ... मैं सम हूँ।।

मैं अडोल और निश्छल हूँ ... मैं सम हूँ।
मैं विचार शब्द न्यायस्वामी हूँ... मैं सम हूँ।।

मैं सभी धर्मों को एक मानता हूँ... मैं सम हूँ।
मैं एक दर्शन में स्थित हूँ ... मैं सम हूँ।।

मैं समभाव-समदृष्टि हूँ ... मैं सम हूँ।
मैं मोक्ष दाता हूँ... मैं सम हूँ।।

समभाव-समदृष्टि हमारी आन है जी।
समभाव-समदृष्टि हमारी बान है जी।।

समभाव-समदृष्टि हमारी शान है जी।
समभाव-समदृष्टि हमारी जान है जी।।

सच तो यह है कि समभाव-समदृष्टि महान है जी।
समभाव-समदृष्टि महान है जी।।

यही तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का फ़रमान है जी।
इसी में सब जीवों का कल्याण है जी।।

ओ३म तूं निर्लेप हूँ ...मैं सम हूँ।।

पहला एंकरः- वाह कितने ही सुन्दर शब्दों में समता का वर्णन किया इन नन्हें मुन्ने बच्चों ने। इस संदर्भ में सजनों निश्चित ही इस कविता में जिस समता की बात की गई है वह सब स्थितियों में भीतरी होनी चाहिए। भीतरी समता से आशय वैचारिक यानि आध्यात्मिक समता से है। यह समता पकड़ी नहीं जाती, न ही बाहर से बनाई जाती है अपितु यह तो साधी जाती है। निर्मल विचार और आचार की निरन्तर साधना से भीतर की समता पैदा होती व पनपती है। जो एक बार भीतर की समता की सुखमय अवस्था का रसास्वादन कर लेता है वह फिर उस समता के संरक्षण व संवर्धन से कभी विलग नहीं होता।

दूसरा एंकरः- याद रखो मन में इस समता का अनुभाव जब समाविष्ट हो जाता है तो वही अनुभव वाणी और कर्म में उतर कर बाहर की समता का सृजन करता है। इस प्रकार आन्तरिक समता जब भीतर से पुष्ट होकर बाहर सजन भाव के रूप में प्रकट होती है तो करुणा, दया, सहानुभूति, सौहार्द, सहयोग आदि सहस्त्र पावन धाराओं में परिवर्तित हो सम्पूर्ण विश्व के समस्त प्राणियों के लिए मंगलमय बन जाती है। वह हज़ारों हृदयों को न केवल सुखद स्पर्श प्रदान करती है अपितु स्वयं में परिवर्तन लाने की प्रेरणा भी देती है। इस प्रकार समता बाहर और समता भीतर समान रूप से बिखर जाती है और जीवन जीने का मजा आ जाता है। अपने इन्हीं शब्दों के साथ अब हम स्टेज पर आमंत्रित करना चाहेंगे, सतयुग दर्शन ट्रस्ट के मार्गदर्शक आदरणीय सजन जी को और उनसे प्रार्थना करेंगे कि वह समभाव दिवस के शुभ अवसर पर अपने आशीर्वचन देकर हम सबका मार्गदर्शन करें:-

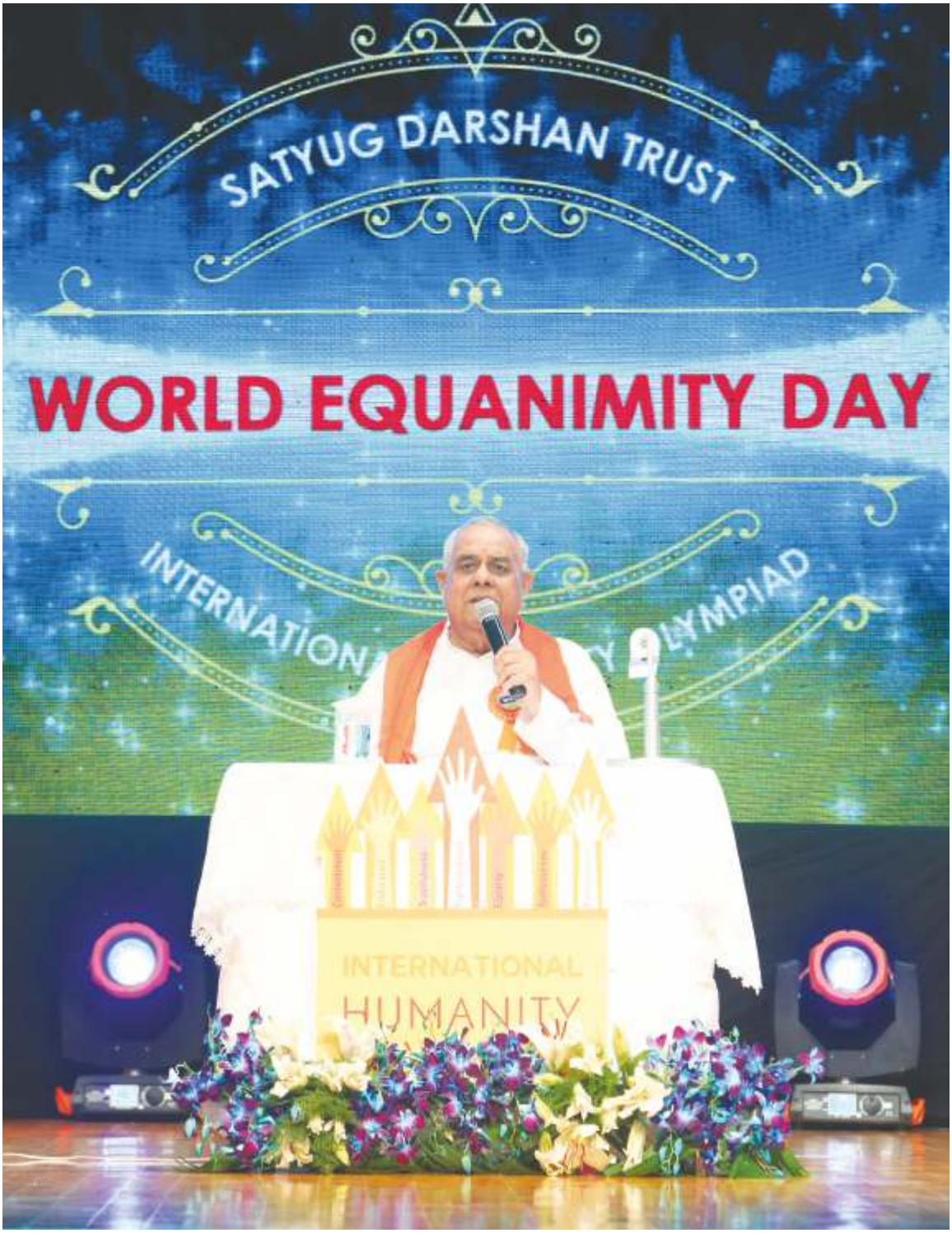
SATYUG DARSHAN TRUST
WORLD EQUANIMITY DAY
INTERNATIONAL
HUMANITY

सभी उपस्थित सजनों का हम इस विश्व समभाव दिवस के शुभावसर पर तहे दिल से हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

जय सीता राम जी।

सजनों आज का दिन अत्यन्त पावन दिन है। आज हम सब यहाँ समभाव दिवस मनाने के लिए, एकत्रित हुए हैं। यह दिवस सम्पूर्ण मानव जाति को सर्वोच्च आत्मिक ज्ञान को आत्मसात् कर, समान प्रकृति में ढलने का आवाहन देता है ताकि सभी अपने मन को वश में रखते हुए, इन्द्रिय निग्रह द्वारा ब्रह्म भाव को हृदयगत कर सकें और अपने यथार्थ स्वरूप को जान व समझ मनुष्यत्व अनुसार स्थिरता और परिपूर्णता से इस जगत में निष्पाप विचरने के योग्य बन सकें। इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों आज हम इस आयोजन के दौरान समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन की आवश्यकता के विषय में जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ जीवनोपयोगी आत्मिक ज्ञान की महत्ता के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे। इस संदर्भ में आप सब स्वीकारेंगे कि समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार परस्पर आत्मीयता अनुसार आचार-व्यवहार करना सुनिश्चित करने हेतु यह प्रत्येक व्यक्ति को जाग्रति में लाने की महान बात है ताकि वह आत्मिक गुण-शक्ति को जान-समझ सर्वगुण सम्पन्न बन सके और ए विध् सशक्त श्रेष्ठ मानव बन जाए। इसी जाग्रति में लाने हेतु ही तो सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें इस प्रकार संदेश दे रहा है कि:-

एक ही मानो एक ही जानो, सजनों एक ही करो प्रवान।
इक इक ही सारा जग दिस्से इक है ओ सर्व महान।।

अर्थात् सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप परमश्रेष्ठ चैतन्य, जो बद्ध जीवात्मा से भिन्न, कार्य-कारण से परे नित्य, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप और मुक्त स्वभाव वाला है, वही परम आराध्य है। उस आदि, अनादि व प्रमादि एकमात्र सत्य को चाहे हम परब्रह्म कहें, निर्गुण ब्रह्म कहें या फिर परमात्मा कहें, केवल वह एक परमधाम स्थित ही सर्वोच्च, सर्वोत्कृष्ट, परम सुन्दर व धारणीय है। यही नहीं इस मायावी सृष्टि के उस परमशून्य सर्वशक्तिमान परम गहन मूलतत्त्व यानि परमात्मा को समझना अत्यन्त कठिन है क्योंकि सूक्ष्मता के कारण न तो उस रूप, रंग, रहित सर्वशक्तिमान को, नेत्र आदि से ग्रहण किया जा सकता है और न ही उस इन्द्रियातीत यानि अतिन्द्रिय 'पुरुष', 'परमात्मा' अथवा 'प्रकृति' का ज्ञान इन्द्रियों से प्राप्त किया जा सकता है। उसे जानने की सामर्थ्य तो केवल उस अतिन्द्रिय मन में है जो अतिन्द्रिय दृष्टि द्वारा इन्द्रियों की सहायता के बिना दूर तक की तथा भूत, वर्तमान व भविष्य की वस्तुओं को देखने की शक्ति रखता है व इसी शक्ति द्वारा कानों की सहायता के बिना, दूर तक की

आवाजें सुनने की अलौकिक समर्थता रखता है। यहाँ यह भी जानो कि उस परमतत्त्व के हर लघुतम से भी लघुतम कण यानि परमाणु में उसके सभी गुणधर्म सदा विद्यमान होते हैं और मानव रूप में कोई भी शरीरस्थ जीव, उस सर्वोत्कृष्ट गुणधर्म को अपना कर, पूर्ण अर्थात् परमात्मा सम सर्वशक्तिमान बन सकता है व सहजता व सरलता से उपाधि-रहित परमेश्वर की, हर आज्ञा का यथा पालन करना, अपने वास्तविक स्वभाव के अंतर्गत कर, सर्वोत्तम गति प्राप्त कर, ब्रह्म नाल ब्रह्म हो, अपना जीवन सफल बना सकता है। इस विवेचना से सजनों स्पष्ट होता है कि परम तत्त्व ही सर्वगत है व अणु ही नित्य और विश्व-प्रपंच का कारण है।

इस बात को सजनों यदि हम ध्यान से समझें तो हमें ज्ञात होगा कि इस विचित्र ब्रह्माण्ड की रचना, परब्रह्म परमेश्वर ने अपनी ही ब्रह्मशक्ति से करी और परमतत्त्व से इसे क्रियाशील कर, अपने ही द्वारा रचित ब्रह्माण्ड के अद्‌भुत खेल का, सर्वोच्च स्वामी बन परमेश नाम कहाया। इसी के साथ सजनों उस परमेश्वर ने इस ब्रह्माण्ड में जीव के रूप में शरीरधारी मानव, जो सबसे उत्कृष्ट कृति है, उसे समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप ब्रह्म भाव अपना कर, परमेश्वर के निमित्त ही, निष्काम भाव से जगत की सेवा करने का आदेश दिया और साथ-साथ ही सचेत किया कि इस परम आज्ञा को सदा याद रखना। इसी के प्रति उसे सतर्क करते हुए उन्होंने उसे सदा यह भी स्मरण रखने के लिए कहा कि इस आज्ञा में कभी भी, किसी विध् भी परिवर्तन संभव नहीं है अर्थात् यह ऐसी आज्ञा है जिसका मानव को तहे-दिल से पालन करना ही होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि केवल अपने जीवनकाल में इस आज्ञा को यथा पालने का पराक्रम दिखाने वाला ही अंत परमगति को प्राप्त होता है। इस तरह इस सर्वोत्तम गति का भावाशय समझाते हुए उस परमेश्वर ने उसे इस सत्य से भी परिचित कराया कि जानो समभाव-समदृष्टि के अनुशीलन द्वारा मोक्ष प्राप्त कर, जो जीव मुझ परब्रह्म में लीन हो जाता है उसकी संसार में वापसी नहीं होती यानि पुनर्जन्म नहीं होता। इस प्रकार वह भवसागर से पार उतर परमधाम स्थित हो जाता है।

इस बात को मध्य नजर रखते हुए ही, सजनों कुदरती आए हुए समस्त वेद-शास्त्र, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुकूल, हर मानव को 'परमार्थ' अर्थात् यथार्थ आत्मिक ज्ञान प्राप्ति द्वारा, अपने ख़्याल यानि सुरत को, परमतत्त्व में स्थित रखते हुए, परिपूर्ण ब्रह्म और जीव का ज्ञान प्राप्त करने को, प्राथमिकता देने का परामर्श देते हैं। अन्य शब्दों में जीव-ब्रह्म की रमज़ जानने के लिए वह, सत्य व आदि-अनादि-प्रमादि कुदरती आए आत्मिक ज्ञान के अथाह भंडार या समुद्र, ब्रह्म की महिमा गाते हुए कहते हैं कि जो भी मानव इस कारण जगत में विचरते हुए उचित पुरुषार्थ दिखा, समयानुसार इस ज्ञान को हृदय में धारण कर समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना लेता है, केवल वह तपस्वी ही, अपने तप के कारण, जगत से इतना ऊपर उठ जाता है कि उसके मन में सम्पूर्णता यानि आत्मतुष्टि का

भाव जाग्रत हो जाता है। ऐसा होने पर सजनों इस मायावी जगत के लिए, उसे अपने प्रभाव से छल कर, यानि उसके मन में काम/कामना उत्पन्न कर, अपने मोहपाश में बाँध, सत्य-धर्म के पथ से भटकाना असंभव सी बात हो जाती है। निःसंदेह सजनों इस कलियुग में कोई विरला ही आत्मिक ज्ञानी समभाव-समदृष्टि के अनुशीलन द्वारा यह अनूठा पराक्रम दिखा, अपने स्वाभाविक रूप को पावनता का प्रतीक बना पाता है और ए विध् अपनी वृत्ति-स्मृति बुद्धि व स्वभावों के ताने-बाने को विशुद्ध अवस्था में साधे रख आत्मा-परमात्मा की समता का अनुभव कर भ्रमरहित हो जाता है। इस तरह वह परमार्थी यानि आत्मप्रकाशी ही अपने हृदय को सचखंड बना पाता है और सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से, निर्दोष, निष्पाप जीवन जीते हुए यानि अटलता से सदाचार के रास्ते पर चलते हुए सर्वहित के निमित्त निष्कामता से परोपकार कमा पाता है।

सरल शब्दों में कहें तो सजनों आत्मज्ञानी ही आत्मिक ज्ञान की परम अवस्था को प्राप्त कर, परम सत्य को जान पाता है और सुबुद्धि, सर्वश्रेष्ठ इंसान बन परमेश्वर नाम कहाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि वह ही अपने ख़्याल को आत्मप्रकाश यानि सर्वोत्तम ब्रह्म सत्ता के साथ जोड़े रख, उसे ग्रहण करने की विधिवत् कला जान, जगत से आजाद हो पाता है और सीधे अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच प्रकाश नाल प्रकाश हो जाता है। प्रकाश नाल प्रकाश हो गया तो सजनों फिर वह परोपकारी इस जगत को सृष्टि के नियमानुकूल चलायमान रखने हेतु, ग्रहण किए प्रकाश को, नीति-नियमानुसार निःस्वार्थ भाव से बाँटते हुए, ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाता है। इस तरह मात्र इतना सा पुरुषार्थ दिखाने पर उस उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल को, किसी अन्य द्वारा प्रदत्त मत या विचार धारण करने की आवश्यकता नहीं रहती और वह बुद्धिमान मनमत से आजाद हो जाता है। यहाँ यह भी याद रखने की बात है कि ऐसा आत्मज्ञानी न तो कभी स्वार्थपर हो अपनी मान्यता कराता है और न ही अहंमति बन, प्राप्त आत्मज्ञान का दुरुपयोग करता है। कहने का आशय यह है कि आत्मिक ज्ञान प्राप्त होने पर वह इंसान कुछ नया नहीं बन जाता अपितु इस सद्-प्राप्ति से तो वह अपने निज यथार्थ यानि सत्-चित्त-आनन्द ज्योति स्वरूप को जान जाता है। इस संदर्भ में परम ऋषि वशिष्ठ व व्यास आदि उच्च कोटि के ऋषियों का उदाहरण हमारे समक्ष ही है। इस महत्ता के दृष्टिगत ही तो सजनों सब वेद-शास्त्र बार-बार कहते हैं कि आत्मिक ज्ञान का सत्कार करो और ऐसा पुरुषार्थ दिखा सुमार्ग पर आगे बढ़ते हुए, इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त कर लो ताकि कदापि फिर से इस संसार में न आना पड़े।

कहने का आशय यह है कि इसी उपलब्धि के दृष्टिगत सभी युग पुरुषों व ऋषि-मुनियों ने परमार्थ' को संसार की सब वस्तुओं में से सबसे श्रेष्ठ वस्तु माना और परमार्थ दृष्टि बन, इस उत्तम संपत्ति को प्राप्त कर परोपकार प्रवृत्ति में ढलने हेतु, अपने मन में प्रबल इच्छा उत्पन्न कर, विरक्त भाव से परमार्थ-सम्बन्धी ज्ञान के चिंतक व साधक बन गए। इस प्रकार मानव चोले में विचरते हुए उन्होंने

समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप, परमतत्त्व की साधना और ब्रह्म की प्राप्ति को ही, अपना सबसे श्रेष्ठ कर्त्तव्य माना। यही नहीं इस आत्मसिद्धि के महत्त्वपूर्ण कार्य को विधिवत् ढंग से, अपने जीवन काल में ही सम्पन्न करने के लिए, उन्होंने अभ्यास द्वारा निपुणता प्राप्त कर, निरंतर विशेष त्याग और परिश्रम वाला एकाग्र प्रयत्न भी किया। परिणामतः वे आत्मसाक्षात्कार यानि आत्मा या ब्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर, आत्माधीन हो गए यानि उन्होंने अपने मन व इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया और अपने आत्मस्वरूप को जान 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिर खड़े हो गए। इस तरह आत्मभाव में रमण करने वाले उन श्रेष्ठ व्यक्तियों ने अपने व्यक्तित्व का तद्नुरूप ही निर्माण कर अपने जीवनकाल में जो कुछ भी किया परमात्मा की आज्ञा अनुसार उसी के निमित्त निष्काम भाव से ही किया। तभी तो वे जगत में विशेष होते हुए भी, सदा उससे निर्लेप अपने इलाही स्वरूप में स्थिर बने रहने वाले ईश्वर के सुपुत्र कहलाए और उन्होंने अंत अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को प्राप्त किया।

बताए तथ्यों से सजनों आत्मिक ज्ञान की महत्ता स्पष्टतः प्रतीत होती है। इस प्रतीति को आत्मसात् करने हेतु आओ सजनों आज हम भी जानते हैं कि हकीकत में यह आत्मिक ज्ञान है क्या और उसे प्राप्त करने का जीवन उपयोगी महत्त्व क्या है?

जानो आत्मिक ज्ञान अपने आप में कुदरत द्वारा रचित वह ईश्वरीय ज्ञान है जो हर मानव को अपनी वास्तविक प्रकृति यानि इलाही स्वाभाविक रूप से भली-भांति परिचित करा आत्मीयता का पाठ पढ़ाता है जिससे मानव के मन में अपनेपन का भाव उत्पन्न होता है और इष्ट मित्र यानि सर्वव्यापक भगवान के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। ऐसा अद्भुत होने पर सजनों उस मानव के मन में इसी भावानुकूल भावना पनपती है और वह इस भावना को आत्मसात् कर, आत्मज्ञानी यानि आत्मा-परमात्मा के स्वरूप को जानने वाला बन जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत, आत्मिक ज्ञान मानव रूप में हर शरीरधारी जीव के लिए बाल्यावस्था से ही अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप को जानने हेतु प्राप्त करना अति आवश्यक है। इसकी प्राप्ति करने पर ही वह यथार्थतः इस जगत में विचरते हुए अपना जीवन लक्ष्य अवरोध समयबद्ध पूरा कर पाता है। अन्य शब्दों में सजनों यदि प्रत्येक माता-पिता अपने अबोध बालक का ख़्याल व ध्यान, जीवन के आरम्भिक काल से ही, जीव-ब्रह्म का विधिवत् पूर्ण ज्ञान कराने वाली ब्रह्म विद्या के साथ जोड़ देते हैं तो निश्चित ही उस बालक का हृदय ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो जाता है और वह यथार्थ आत्मज्ञान रूपी उत्तम सम्पत्ति को प्राप्त कर, मानसिक रूप से सुदृढ़ हो, आध्यात्मिक यथार्थता पर स्थिर बने रहने के योग्य बन जाता है। इस तरह वह परमार्थ दृष्टि फिर निष्कामता से मानवता के

सिद्धान्त अनुसार इस जगत में सब कुछ परमेश्वर के निमित्त करते हुए निष्पाप जीवन जी पाने के योग्य बन स्वयंमेव ही परोपकार प्रवृत्ति में ढल, परमात्म स्वरूप हो जाता है। सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारी सबसे प्रार्थना है कि अनथक परिश्रम द्वारा अपनी संतानों को ऐसा ही बनाओ ताकि वे पाप वृत्ति अर्थात् भ्रष्टाचारी, दुराचारी, व्यभिचारी व अत्याचारी बनने से बच जाएं और शांति-शक्ति को धारण कर, स्वतन्त्र रूप से परमार्थ सम्बन्धी ज्ञान के चिंतक और साधक बन जाएं। याद रखो ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर ही वे इस जगत में निर्भयता से विचरते हुए, जीवन के परम लक्ष्य को आत्मसात् कर पाएंगे।

इस विषय में सजनों यह भी जानो कि यह ज्ञान इतना स्पष्ट, सहज, सरल व सत्यता से परिपूर्ण है कि इसको प्राप्त करने पर मानव अपने अंतर्निहित वास्तविक आत्मिक गुणों व शक्ति से पूरी तरह से परिचित हो जाता है और आत्मनिर्भरता व प्रसन्नचित्तता से आत्मविश्वास के साथ सब कुछ सफलतापूर्वक करने की सामर्थ्य दर्शाता हुआ अपना जीवन सफल बना लेता है। इसलिए तो सब विद्वान कहते हैं कि 'इस ज्ञान को धारण करने वाला मानव, न केवल अपने मन और इन्द्रियों को अपने अधिकार में रखते हुए, अपने जीवन का लक्ष्य सिद्ध कर, अंत मोक्ष को प्राप्त कर लेता है अपितु वह जितेन्द्रिय तो समचित्त व समदर्शी बन सबसे ज्ञानवान, गुणवान व शक्तिशाली भी बन जाता है'। इस तरह सब उसके व वह सबका प्रिय बन अखंड यश कीर्ति प्राप्त करता है।

इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए सजनों इस कुदरती ज्ञान को हर मानव को दिल से स्वीकारना चाहिए व जन्म उपरांत, समय रहते ही, इसको धारण कर आत्मतुष्टता व धीरता से इसका प्रयोग करने की कला में पारंगत हो जाना चाहिए। इस तरह फिर आजीवन इस जगत में मौत के भय से निर्भय होकर व निर्लिप्तता के भाव में स्थिर रहकर, निष्कामता से समुचित अपना व जगत का उद्धार करने के प्रति सदा तत्पर रहते हुए अपना तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाना चाहिए। कहने का आशय यह है कि इस परम पुरुषार्थ द्वारा, सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से परोपकार कमाते हुए, पहले निष्कामी और फिर ब्रह्मज्ञानी बन, अपने असलियत स्थान को पा, विश्राम अवस्था को प्राप्त हो जाने में ही, मानव को अपनी वास्तविक शान समझनी चाहिए।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इस आत्मिक ज्ञान को कहाँ से और कैसे प्राप्त करना होता है?

इस प्रश्न के उत्तर में सजनों हमारे साथ-साथ आप भी यह स्वीकारेंगे कि जिस कुदरत ने यह शरीर रूपी नश्वर भांडा घड़ा है और उसमें जीव को पा कर चलायमान यानि क्रियाशील किया है, उस कुदरत के वाली के अतिरिक्त भला अन्य कोई और कैसे हमें इस कुदरती उत्कृष्ट कृति के विधिवत्

संचालन के संदर्भ में परिपूर्ण ज्ञान प्रदान कर परम लक्ष्य की सिद्धि कराने में समर्थ हो सकता है? निःसंदेह शरीर रूपी मशीनरी की बनत बनाने वाला वह परम कुशल, कारियों का कारीगर ही, आत्म तत्व सहित इस मशीनरी की वास्तविक गुणवत्ता व शक्ति यानि समर्थता से हमें समुचित ढंग से परिचित करा, इसका पूरा लाभ प्राप्त करने के प्रति, हमें यथार्थ रूप से आत्मिक ज्ञान प्रदान कर सकता है और इसके लिए उसने इस समूचे शरीर में भरपूर व्यवस्था भी की हुई है। तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

चार वेद ग्रन्थ है ओ हृदय, छः शास्त्र तो रोमावली हुआ।
रोम रोम विच वेद ही लिखित है, अंग अंग विच एही तो रंगावली हुआ।।

अर्थात् स्वतन्त्रता से अंतर्निहित सत्ययुक्त आत्मिकज्ञान प्राप्त करने हेतु परमेश्वर कहते हैं कि 'हे मानव ! तेरे हृदय में ही समस्त वेद ग्रंथ प्रकाशित हैं। जिस प्रकार तेरे समस्त शरीर में प्राण अविरल प्रवाहित हो रहा है ठीक उसी प्रकार इन गुप्त वेदों का क्रम से एकत्रित किया हुआ सारा ज्ञान/विज्ञान छः शास्त्रों के सार रूप में तेरे रोम-रोम अर्थात् सारे शरीर में रमा हुआ है। अतः अन्दरूनी वृत्ति में प्रणव मंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा मस्तक की ताकी खोल, अंतर्निहित इन गुप्त वेदों के ज्ञान प्रकाश को ग्रहण कर, 'आत्मा में जो है परमात्मा', उसको जानने का परम पुरुषार्थ दिखा और इस प्रकार शरीरस्थ छः शास्त्रों के भाव या धर्म को अपना कर, ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करने में समर्थ हो जा। ऐसा करने से अंग-अंग आत्मीयता के भाव से सराबोर हो जाएगा और स्वतः ही समभाव नजरों में हो जाएगा। फिर सर्व एकात्मा के भाव से ओत-प्रोत हो, सच्चाई-धर्म की राह पर निष्काम भाव से प्रशस्त होना व समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। ए विध् आप परम पुरुषार्थ द्वारा 'मैं-तूं' का भेद मिटा, अफुरता से अपना जीवन लक्ष्य समयबद्ध सिद्ध करने के यत्न में सफल हो जाओगे। यह है सजनों सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि।

इस उपलब्धि के दृष्टिगत आज समभाव दिवस के शुभ अवसर पर सजनों हम तो यही कहेंगे कि समभाव समदृष्टि की महत्ता को समझो और अगर इस नश्वर शरीर व आत्मतत्त्व की सत्यता पूर्ण जानकारी प्राप्त करना चाहते हो तो अविलम्ब और कामों से अधिक आत्मिक ज्ञान की प्राप्ति कर ब्रह्मज्ञानी बनने को प्राथमिकता दो और ए विध् जीव ब्रह्म के खेल को जान जाओ। इस प्रकार सजनों आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित्तता से पुरुषार्थ कर, शीघ्रता-अति-शीघ्र आत्मज्ञानी बन जाओ और अपने परिवारजनों को भी वैसा ही विद्वान बना दो। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही संसारी स्वभाव छोड़ आत्मिक गुण व शक्ति को धारण कर सकोगे और एक सशक्त इंसान की तरह इस जगत में विशेषतया निर्भयता से विचरते हुए भी उससे निर्लिप्त रह, अपने आत्मिक स्वाभाविक

रूप में स्थिरता से बने रहने वाले सदाचारी इंसान बन पाओगे। जानो जीवन विजयी होने की एकमात्र यही युक्ति है, अतः इस युक्ति को प्रवान कर दुर्लभता से प्राप्त हुए इस अनमोल मानव जीवन के वास्तविक अर्थ को सिद्ध करना ही अपना सर्व महान कर्त्तव्य मानो व परम श्रेष्ठ चैतन्य की पहचान कर कालातीत हो जाओ। यही नहीं इस सर्वोत्तम पद को प्राप्त करने हेतु हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील और परिग्रह जैसे स्थूल पापों से दूर रहने का तत्क्षण ही संकल्प लो और शीघ्रता-अति-शीघ्र ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सूक्ष्मता से अपने गुण-दोषों का निरीक्षण करो व शारीरिक स्वभाव छोड़ आत्मिक ज्ञान, गुण व शक्ति को धारण कर 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश, ईश्वर है अजपा जाप' के विचार पर खड़े हो जाओ। इस तरह इस जगत में पुनः मानवता का झंडा बुलंद कर, जीवनमुक्त हो जाओ और अंत विश्राम को पाओ।

आप सबकी जानकारी हेतु, आज की भटकी हुई मानव जाति को मानसिक रूप से इसी प्रकार तैयार करने के उद्देश्य के निमित्त ही, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार, सतयुग दर्शन वसुन्धरा परिसर में, 'ध्यान-कक्ष' अर्थात् 'समभाव-समदृष्टि का स्कूल' खोला गया है। इसके अतिरिक्त ट्रस्ट अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समाज के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक उद्धार हेतु प्रयासरत है। अंतर्राष्ट्रीय मानवता ओलम्पियाड भी इसी गतिविधि का एक अभिन्न हिस्सा है। इस संदर्भ में हम इस अंतर्राष्ट्रीय मानवता ओलम्पियाड को सम्पन्न कराने में सहायक, उन समस्त प्रिंसिपल्स, टीचर्स व वॉलेंटियर्स का, हृदय से धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने मानवता, सदाचार व नैतिक मूल्यों में उत्कृष्टता लाने हेतु, निष्काम भाव से, अपना बहुमूल्य योगदान दिया। हमें पूर्ण विश्वास है कि, भविष्य में मानव जाति की एकता व शांति हेतु किए जाने वाले प्रयासों में भी, आप सबका सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होगा।

अंत में सजनों एक बार फिर हम उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए, आज के शुभ दिन प्रतिवर्ष की भांति सम्पूर्ण मानव जाति को आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखने के योग्य बनाने हेतु व हर वर्ग के व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से और सम्पूर्ण मानव समाज को, बाल्यावस्था से ही कुदरत प्रदत्त आत्मिक स्वाभाविक गुणों में सुदृढ़ता से ढालने हेतु, समस्त देशों की सरकारों व यू० एन० ओ० (United Nations Organisation) से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि पूरे संसार में आध्यात्मिक विद्या गहनता से प्रदान करने की ऐसी अचूक व्यवस्था कायम करो कि हर मानव परिपूर्णता से इंसानियत में ढल जाए। जानो हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हर मानव, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास कर, तद्नुरूप आचार-व्यवहार दर्शा पाएगा और मानव होने के भाव में स्थित रह यानि सुनिश्चित रूप से मानवतावाद के सिद्धान्त का अनुयायी बन अपने जीवनकाल में सदा लोक-कल्याण के कार्य करने वाला समभावी बन पाएगा।

इस संदर्भ में आप सब मानोगे कि परिवार चलाने वाले अभिभावकों व देशों के शासकों के लिए, भौतिक विकास के साथ-साथ ऐसा सुनिश्चित करना परम आवश्यक है। ऐसा इसलिए क्योंकि यदि समय रहते ही हर मानव को उसके मूल स्वाभाविक गुणों से विधिवत् व समयबद्ध परिचित नहीं कराया गया तो आत्मिक ज्ञान के अभाव के कारण आत्मविस्मृत वह इंसान एकरस सचेतन अवस्था को प्राप्त नहीं रह पाएगा। यही मानसिक कमज़ोरी फिर उसकी विवेकशक्ति के कमज़ोरी होने का कारण बनेगी और वह भ्रमित बुद्धि विकृतियों को विकृत करने वाले सांसारिक अवगुण यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अपना कर, असत्य और अधर्म के रास्ते पर चढ़ जाएगा। इस तरह अपने मन व इन्द्रियों के आगे आत्मसमर्पण करने वाला वह दुष्ट इंसान फिर जीवन में जो भी करेगा पाप कर्म ही करेगा और कर्मगति अनुसार फल प्राप्त होने पर कभी दुःखी होगा तो कभी सुखी पर मानव जीवन की मर्म जानकर अपना जीवन सफल कदापि नहीं बना पाएगा।

सजनों आप सब स्वीकारेंगे कि आज संसार में अधिकतर मानवों की यही दयनीय मानसिक दशा है। इसी निर्बल अवस्था के कारण ही आज हर मानव केवल भौतिकवादिता के सिद्धान्त को अपना बैठा है और अपना स्वाभाविक रूप सम अवस्था में रख पाने में असमर्थ हो गया है। ऐसे में आप ही बताओ कि वह समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार कैसे कर सकता है?

आज के बाद सजनों अब आगे ऐसा न हो इसलिए हम हाथ जोड़ कर सबको प्रार्थना करते हैं कि होश में आओ, होश में आओ और हिम्मत दिखा कुल मानव जाति को इस स्वाभाविक नैतिक पतन की गर्त में जाने से बचा लो। इस हेतु समय रहते ही वसुन्धरा परिसर की ही भांति, जगह-जगह पर समभाव-समदृष्टि के स्कूल खोलकर, हर मानव को उचित ढंग से आत्मिक ज्ञान प्रदान करने की व्यवस्था कायम करो ताकि प्रत्येक मानव अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक व धार्मिक कर्त्तव्यों के प्रति समुचित ढंग से जाग्रत हो, समान मानसिक स्थिति वाला बन जाए। अंत में हम कहना चाहते हैं कि एकजुट होकर ऐसा अनथक परिश्रम दिखा, हर मानव के हृदय में मानवता का विकास कर पुनः इस जगत में मानवता का परचम लहरा दो व इस पावन धरा से कलियुग का नामोनिशान मिटा, सतयुग की स्थापना कर रोती हुई भारत माता को हर्षा दो। आप सब ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु हम तो यही कहेंगे किः-

समभाव-समदृष्टि की युक्ति बेमिसाल है
अब तो होने वाला कुछ ऐसा कमाल है
क्या..... ?

सजन भाव के व्यवहार से, अब होना धमाल है।
क्या..... धमाल ! आप किस धमाल की बात कर रहे हो जी.....?

कलुकाल चला जाएगा, सतवस्तु आ जाएगी
सतवस्तु आ जाएगी, सतवस्तु आ जाएगी तो.....बहुत ही मजा आ जाएगा।

अरे तब तो जीवन में आनन्द ही आनन्द छा जाएगा।
हाँ.. हाँ.. तभी तो परमधाम पहुँच ज्योति नाल जोत हो, जीव विश्राम को पाएगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

पहला एंकरः- धन्यवाद सजन जी। आपके व्याख्यान से हमें स्पष्ट हुआ कि वेद ब्रह्म वाणी हैं। इनमें विदित विचार धारण करने पर इंसान इस सिद्धान्त पर अटलता से खड़ा हो जाता है कि सम्पूर्ण विश्व ब्रह्ममय अथवा ब्रह्म निर्मित है और उसी की शक्ति से ही चल रहा है। इसलिए हर मानव के लिए बनता है कि इस विचार पर सुदृढ़ता से स्थिर बने रहने हेतु समय रहते ही ब्रह्म विद्या ग्रहण करे और अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य इसी जीवन में सिद्ध करने हेतु वेदों के अर्थ और तत्व को जानने वाला बन जाए। इस प्रकार ब्रह्मज्ञानी बन ब्रह्म वृत्ति को धारण करे और ब्रह्म द्वारा रचित, प्रतीत होने वाले इस कारण जगत की रमज़ जान जाए तथा ए विध् आत्मबोध होने के पश्चात् वेद विदित ब्रह्म आज्ञाओं की मन चित्त लगा कर पालना करना व ब्रह्म ज्ञानियों की संगति में रहने के स्वभाव में ढले।

दूसरा एंकरः- यही नहीं इसके साथ हमें यह भी ज्ञात हुआ कि आत्मिक विद्या प्राप्त करने हेतु मस्तक की ताकी खोलनी आवश्यक है क्योंकि जब मस्तक की यह ताकी ख़ुल जाती है तो अंतर्विदित आत्मिक ज्ञान की गंगधारा इस तरह बह उठती है कि हृदय व रोम-रोम, रग-रग में जन्म-जन्मांतरों से छाई अविद्या रूपी मैल धुल जाती है। इस तरह अज्ञान का बादल पूर्णतया छँट जाता है और ए विध् वृत्ति-स्मृति सब निर्मल हो जाती है। ऐसा हितकर होने पर निर्मल व स्थिर बुद्धि बल के प्रभाव से धीरे-धीरे इन्सान के स्वभावों का ताना बाना भी निर्मल हो जाता है और मानव पावनता का प्रतीक सजन पुरुष बन जाता है। यह ख़्याल का सर्वव्याप्त सत्य से नाता जुड़ने जैसी मंगलमय बात होती है। बस फिर तो सत्यज्ञान को विधिवत् धारण कर व उचित ढंग से समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार वर्त-वर्ताव में लाते हुए स्वतः ही मानव का हृदय सचखंड बन जाता है और इन्सान सत्यनिष्ठा से, इस जगत में निष्काम भाव से विचरने में ही अपनी शान समझता है। इस प्रकार उस चेतन अवस्था को प्राप्त सत्यवर्ती इन्सान के लिए तीनों तापों से मुक्त हो, निर्दोष व निर्विकार धर्मसंगत जीवन जीते हुए अंत ब्रह्म नाल ब्रह्म होना सरल व सहज हो जाता है। तभी तो विसूचिका सूचिका हो जाती है यानि एक तो समस्त रोगों से छुटकारा प्राप्त हो जाता है और दूसरा इंसान जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। ऐसा आत्मतुष्ट इंसान परम पुरुषार्थ द्वारा अपना जीवन प्रयोजन सिद्ध करने में सुनिश्चित रूप से सफल हो जाता है और जीव अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है।

पहला एंकरः- अब मैं प्रार्थना करती हूँ प्रतिष्ठित कथक कलाकार, पदमश्री अवार्ड से नवाजी गई, सुश्री शोवना नारायण जी से कि वह मंच पर आएं और अपने कर कमलों द्वारा विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करें।

EQUANIMITY DAY

WORLD EQUANIM DAY

WORLD EQUANIMITY DAY

WORLD EQUANIMITY DA

धन्यवाद शोवना नारायण जी। अब मैं प्रार्थना करती हूँ सजन जी से कि वह सुश्री शोवना नारायण जी को सम्मानित करें।

दूसरा एंकरः- धन्यवाद सजन जी। आईए अब कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए देखते हैं हमारी अगली प्रस्तुति 'फिर समभाव-समदृष्टि वाले सर्गुण-निर्गुण, एक निगाह आया और एक ही सुहाया' :-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख की शाख)

फिर समभाव समदृष्टि वाले, सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया और एक ही सुहाया।
ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया और एक ही सुहाया।।

सर्गुण निर्गुण ओहदी सूरत है जे इलाही।
कैसी है सुन्दरताई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सर्गुण निर्गुण में कैसी ओहदी है रहणी बहणी।
रौशनी है सर्व सबाई ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

एक ही मानो एक ही जानो सजनों एक ही करो प्रवान।
इक इक ही सारा जग दिस्से इक है ओ सर्व महान, ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना।।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवनसुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।।

पहला एंकरः- स्पष्ट है सजनों समस्त धर्म ग्रन्थ, सभी महान युग पुरुषों के पावन जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए, प्रत्येक मानव को उनके समान, जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में समभाव-समदृष्टि की युक्ति की पालना द्वारा, मानव धर्म पर सुदृढ़ बने रहने का संदेश दे रहे हैं। अन्य शब्दों में सजनों यदि कहें तो समस्त धर्म-ग्रन्थों में उस विशेष समयकाल की परिस्थितियों के अनुसार, मानव-धर्म अनुरूप व्यवहारिक सत्यज्ञान, मात्र दो शब्दों में सिमटा हुआ है.....वे हैं समभाव-समदृष्टि। समभाव-समदृष्टि का अनुशीलन करके ही तद्कालीन परिस्थितियों में विभिन्न युग-पुरुषों ने परस्पर सजनता का सत्यनिष्ठा से व्यवहार करते हुए धर्म की स्थापना की और अधर्म का नाश किया।

दूसरा एंकरः- आज की परिस्थितियों में भी हम इन्हीं दो शब्दों यानि समभाव-समदृष्टि के भावार्थों को यथा व्यवहारिक रूप देने पर ही समाज में व्यापक रूप से फैली कुरीतियों, मान्यताओं, रूढ़िवादिताओं व अंधविश्वास के कारण फैली धर्मान्धता, अराजकता, अलगाववाद, जातिवाद, अन्याय, शोषण, आतंकवाद, भिन्न-भेद, अमीरी-गरीबी जैसी बिमारियों से मुक्त हो, समानता के आधार पर न्यायसंगत समाज का निर्माण करने में सफ़ल हो पाएंगे।

पहला एंकरः- निःसंदेह वैश्विक स्तर पर ऐसी एकछत्र आदर्शतम सुदृढ़ शासन व्यवस्था को लागू करने के लिए सबको अर्थात् समस्त शिक्षाविदों को, अभिभावकों को, ज्ञानियों को, धार्मिक गुरुओं को, राजनैतिक नेताओं को एकजुट होकर, इस युक्ति के अनुशीलन में इस तरह पारंगत बनना होगा कि उनके आचार-विचार व व्यवहार के आदर्शतम रूप से प्रभावित हो, हर मनुष्य, मानव-धर्म को अपना सर्वस्व मान, न केवल तद्नुकूल व्यक्तित्व में ढलने के लिए बाध्य हो जाए अपितु उस पर अपना सब कुछ निछावर करने के लिए भी तत्पर हो जाए।

दूसरा एंकरः- सजनों हकीकत में यही अपने आप में मानवता व मानवता पर खरे उतरने वाले उन युग पुरुषों के प्रति पूर्ण श्रद्धा व सम्मान का प्रतीक होगा। अतः इस बात को धैर्य से समझो और इस शुभ कार्य की सिद्धि हेतु यानि मानवता को पुनः हर मन में प्रतिष्ठित करने के लिए समर्पित भाव से सब मिल कर आगे बढ़ो। इसी संदर्भ में प्रस्तुत है हमारी अगली आइटम 'आओ समभाव समदृष्टि की युक्ति प्रवान करें':-

आओ समभाव समदृष्टि की युक्ति प्रवान करें।
जैसे हमारे युग पुरुष थे वैसे ही इन्सान बनें।।
आओ हम तुम, तुम हम मिलकर, उन जैसी ही चाल चलें।
जैसा उन्होंने कर दिखलाया, वैसा ही कमाल करें।।

समभाव को राम ने माना,
जिनके हैं हम सब अनुयाई।
समभाव को कृष्ण ने माना,
जिन संग सबने लगन लगाई।।

समभाव ग्रन्थों में विदित है,
जिनकी हम करते हैं पढ़ाई।
फिर भी क्यों समभाव की कीमत हमने नहीं है पाई,
कैसे हैं सौदाई यह बात समझ नहीं आई।।

समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाकर,
ग्रन्थों की वाणी का सत्कार करो।
उनमें वर्णित जीवन चरित्र अनुरूप ढलकर,
अपने पर उपकार करो।।

इसलिए कहते हैं सबसे, सतयुग दर्शन पाने हेतु,
सब ही अपनी वसुन्धरा पर आओ जी।
समभाव समदृष्टि की युक्ति क्या है,
ख़ुद समझ सबके सुख के हेतु
औरों को भी समझाओ जी।
फिर समभाव समदृष्टि अपना
सभी सुखी हो जाओ जी, सभी सुखी हो जाओ जी,

इस संदर्भ में यह याद रखो -

ईश्वर ही सम है, सम ही ईश्वर है, सम ही है उसकी ब्रह्म सत्ता।
सम ही सर्वात्मा विच परमात्मा है, फिर सम ही अजपा जाप है
और सम ही अपना आप बिन सूरजों प्रकाश है।

विच

पहला एंकरः- स्पष्ट है सजनों सम से साम्य उत्पन्न होता है। साम्य समान होने का भाव है, समानता है, समता है। भावों में एकरूपता का होना साम्य का अनिवार्य तत्व है। तभी तो कहा जाता है कि सुख-दुःख, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, जय-पराजय को एक समान देखो। साम्य का अभीष्ट समभाव स्थापित करना है। यह निरपेक्षता व निष्क्रियता की अवस्था है। इस स्थिति में कर्त्ता होते हुए भी, हर कर्म निष्कामता व अकर्त्ता भाव से सम्पन्न किया जाता है। फलतः आसक्ति व लिप्ति नहीं होती और कर्मफल से बचा रह इंसान अपनी मूल स्वरूप स्थिति में बना रहता है। युग पुरुषों में मूलतः ऐसा साम्य पाया जाता है जिसके अंतर्गत वह राग-द्वेष से ऊपर उठ जाते हैं और सुख और दुःख, जीवन की धूप और छाँव, शीतलता और उष्णता को समभाव से देखते हैं। इसलिए तो आज उन महान विभूतियों के नाम सर्व रौशन हैं।

दूसरा एंकरः- अतः सजनों हमें मानना होगा कि समरसता ही नैतिक व चारित्रिक रूप से मनुष्य को ऊपर उठाती है। सजनों हम सब भी समभाव अपना कर अपने जीवन में समदर्शिता अनुरूप व्यवहार करने के योग्य बनने का अद्‌भुत कमाल दिखा सकें इस हेतु निःसंदेह सर्वप्रथम हमें अपने असलियत स्वरूप की पहचान करनी होगी यानि जानना होगा कि वास्तव में - मैं कौन हूँ। लीजिए आपको इसी की चेतना दिलाने हेतु पेश है हमारी अगली प्रस्तुति, जिसका शीर्षक है–आत्म-चेतना। कृपया ध्यान से देखिए और समझिए कि मैं कौन हूँः-

नृत्य नाटिका

आत्म चेतना.....कि मैं कौन हूँ?

सजनों आओ इक बात बताएं
सुनना मन-चित्त ध्यान लगा करके
सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से
मुझे यह सत्य बोध हो रहा है
कि मैं अमर आत्मा हूँ, नश्वर शरीर नहीं
हाँ मैं अमर आत्मा हूँ, नश्वर शरीर नहीं
मुझ आत्मा में ही परमात्मा है
कहीं और नहीं
इसलिए तो मैं मानता हूँ
कि अमर है मेरी आत्मा
जो न जन्म में है, न मरन में है
न रोग में है, न सोग में है
न खुशी में है, न ग़मी में है
न मान में है, न अपमान में है
न अमीरी में है, न गरीबी में है
वह तो अमीरों का भी अमीर है
इसलिए अब मैं शब्द ब्रह्म को ही
आत्मिक स्वरूप मानता हूँ
और मिथ्या संसार में विचरते समय
उसी नित्य परमात्म स्वरूप में
अपनी सुरत जोड़े रखना उचित समझता हूँ
अब ओ३म् ही मेरा मंत्र है
जो जगत से स्वतन्त्र है
तभी तो मैं इस शाश्वत शब्द गुरु की मंत्रणा अनुसार

इस जगत में विचरते हुए भी
स्वतन्त्र रहने में समर्थ हूँ
और अपनी इस वास्तविकता से
परिचित हो गया हूँ कि मेरे
हृदयगत ही ओ३म् दे हिन चार वेद
और रोम-रोम में छः शास्त्रों का प्रकाश है
इसलिए अब मेरा हृदय आत्मप्रकाश से
पूर्णतः प्रकाशित हो गया है
और मैं अमर आत्मा हूँ
यह सत्य प्रगट हो गया है
इस सत्य के प्रकट होने पर मैं
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
इस विचार पर खड़ा हो गया हूँ
और इस विचारयुक्त रास्ते पर
चलते हुए परमार्थ की ओर बढ़ रहा हूँ
तभी तो अब परम अर्थ सिद्ध कर पाना
मुझे सहज व सरल लगता है
ऐसा चमत्कार होने पर
मेरी सुरत ज्ञानेन्द्रियों से टप्पा मार
ब्रह्म शब्द के साथ जा जुड़ी है
और अपने उस सर्वोच्च स्थान को प्राप्त कर चुकी है
जहाँ विषयी जगत का कोई स्थान नहीं
बस अब तो सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है
इस तरह सुरत का शब्द संग योग होने पर
मेरे हृदय का वातावरण बहार की तरह खिल उठा है
और पूर्णतः सकारात्मक हो गया है
इसके सद्प्रभाव से मैं जान गया हूँ

कि मैं परमात्मा का ही स्वरूप हूँ
अर्थात् मैं अमर आत्मा किसी विध् भी
परमात्मा से भिन्न नहीं हूँ
अतः अब मैं मानता हूँ कि हम एक हैं
हम एक हैं और एकता के ही प्रतीक हैं
यही नहीं अब मैं यह भी जान गया हूँ कि
सम होने के नाते
समभाव नजरों में कर
समदर्शिता अनुरूप
सत्यता से इस जगत में विचरना ही
मेरा मुख्य धर्म है
अब मुझे समझ आ गई है
हाँ अब मुझे समझ आ गई है
कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्योंकर
हर मानव को समभाव समदृष्टि की युक्ति
अपनाने का आवाहन दे रहा है
और बारम्बार समझा-समझा कर कह रहा है
जो प्रकाश देखो मन मन्दिर
ओही प्रकाश देखो जग अन्दर
और सर्वव्याप्त ब्रह्म प्रकाश
की महिमा जान जाओ।
जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर
स्वतः ही कह उठोगे
कि सर्व एक ब्रह्म ही ब्रह्म है
जो हर अन्दर सुहा रहा है
व जनचर बनचर, जड़ चेतन में हर्षा रहा है
अतः जानो शरीरधारी जीवों के

शरीरों की बनावट तो अलग अलग हो सकती है
यानि कोई पतला व भारी, गोरा या काला हो सकता है
पर सबका आत्मिक स्वरूप एक ही है
जो इस कारण जगत में
विशेष होते हुए भी सदा उससे निर्लेप रह
निर्गुण सर्गुण के खेल खेलता है
यह जानने समझने के पश्चात्
हम सबके लिए बनता है
कि महाबीर जी के मार्गदर्शन में बने रह
शब्द गुरु की मंत्रणा अनुसार, ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर
हम अपने ख़्याल को जगत से आजाद कर
अविलम्ब परम तत्त्व के साथ जोड़ लें
और संतोष-धैर्य का सिंगार पहन
इस मिथ्या जगत में निर्भयता से
सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर विचरते हुए
एकता एक अवस्था में स्थिरता से बने रहें
इस तरह मौत के भय से मुक्त हो
हम अपने जीवन की बाजी जीत लें।
बोलो सजनों क्या ऐसा करने के लिए तत्पर हो जी?

हाँ जी।

अगर ऐसा शुभ करना मंजूर है
तो सब मिलकर बोलो
समभाव दी होसवे फ़तह, समभाव दी होसवे फ़तह,
समभाव दी होसवे फ़तह
जानो सजनों इसलिए तो कहा गया है
समभाव समदृष्टि की युक्ति बेमिसाल है

समभाव समदृष्टि की युक्ति बेमिसाल है
अब तो होने वाला कुछ ऐसा कमाल है.....

समभाव समदृष्टि की युक्ति बेमिसाल है
अर्थात् समभाव-समदृष्टि का सबक अपनाकर
व आत्मिक ज्ञान गुण शक्ति अपना
उच्च बुद्धि उच्च ख़्याल होकर
हम सुनिश्चित रूप से
जन्म की हारी हुई बाजी जीतने वाले हैं
जीतने वाले हैं, जीतने वाले हैं, जीतने वाले हैं
अब सब इस कल्याणकारी कार्य के प्रति मन में दृढ़ संकल्प रखते हुए मिल कर बोलो
जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे
हनुमान जी दे वचनां ते चल चल कर
हम जन्म की बाजी जीतेंगे
जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे

जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे

अंत में जानो कि जब तक बाल अवस्था के भक्ति भाव का खेल चल रहा था तब तक हमें भी परमार्थ का रास्ता थोड़ा कठिन लगता था पर सहसा ही जब युवावस्था का भक्ति भाव यानि समभाव समदृष्टि की सौखी युक्ति आई तो उसकी जीवनोपयोगी महिमा व गरिमा सुनने व समझने पर स्वार्थ का अविचार युक्त रास्ता छोड़ परमार्थ का विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपनाना मन को इस तरह भा गया जिसका अंत परिणाम आपके समक्ष ही है। सजनों आप सब भी ऐसा करने में कामयाब हो इस हेतु परमेश्वर समय की चाल को देखते हुए बारम्बार समभाव समदृष्टि की युक्ति अपनाने का आवाहन दे रहे हैं और कह रहे हैं कि विजयी भव, विजयी भव, विजयी भव।

दूसरा एंकरः- हकीकत में ही यह प्रस्तुति तो कमाल है। प्यारे बच्चों ने बड़े ही निराले ढंग से यह प्रस्तुति देकर हमें आत्मिक ज्ञान प्राप्ति की महत्ता जनाई। इसी परिप्रेक्ष्य में अब मैं प्रार्थना करती हूँ, कर्नल वी0 एन0 थापर जी को कि वह मंच पर आएं और अपने कर कमलों द्वारा विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करें:-

SATYUG DARSHAN TRUST

SATYUG DARSHAN TRUST

SATYUG DARSHAN TRUST

धन्यवाद कर्नल वी० एन० थापर जी। अब मैं परम आदरणीय श्री सजन जी प्रार्थना करती हूँ कि वह कर्नल वी० एन० थापर जी को सम्मानित करें।

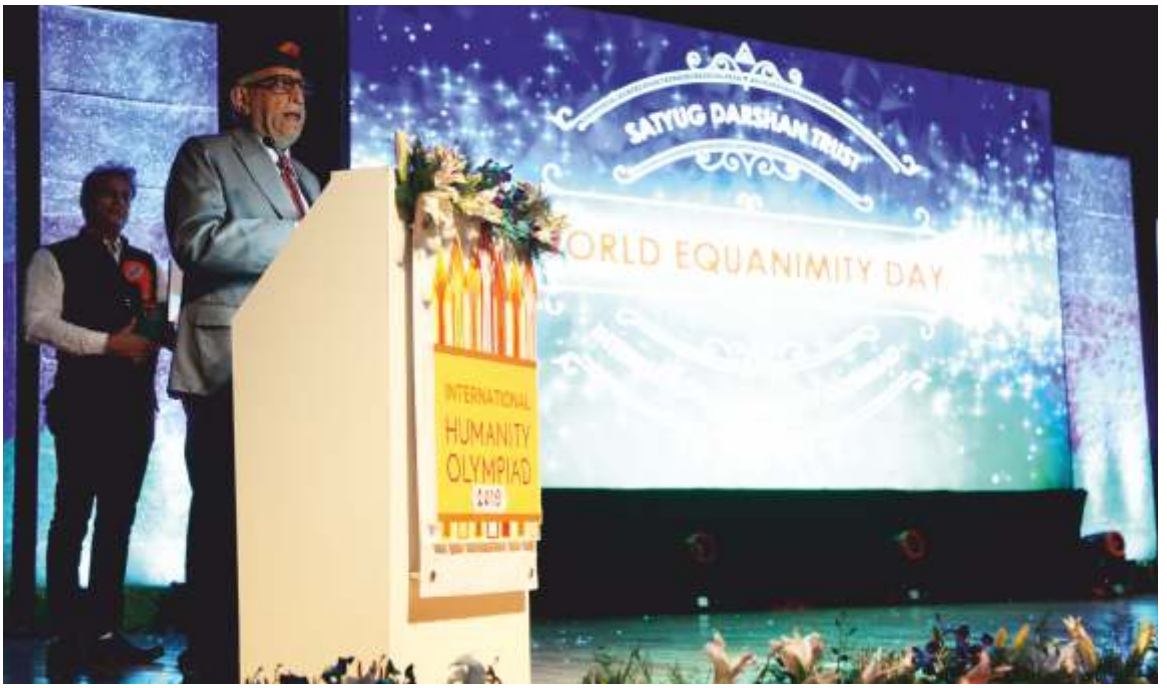

पहला एंकरः- धन्यवाद सजन जी।

सजनों कितनी विडम्बनीय स्थिति है कि समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन की महत्ता के विषय में समस्त वेद-शास्त्रों व ग्रन्थों में इतना कुछ विदित होने के बावजूद भी हम इस युक्ति को आत्मसात् करने हेतु आत्मज्ञान प्राप्ति की महत्ता को समझ नहीं पा रहे और भौतिकता की अंधाधुंध दौड़ में भागते हुए मात्र क्षणभंगुर सुख-साधन उपलब्ध करने के पीछे ही लगे हुए हैं और भौतिक उन्नति को ही प्रगति की राह पर अग्रसर होना मानते हैं?

दूसरा एंकरः- इस संदर्भ में मैं पूछना चाहती हूँ कि हमें जड़वाद के प्रतीक इस भौतिक ज्ञान द्वारा, समय-समय पर बदलने वाले भौतिकवादी विचार ग्रहण कर, जड़वाद का अनुयायी या समर्थक बन, परिस्थितियों अनुसार पल-पल बदलने वाले स्वाभाविक रूप का ताना-बाणा बुन, अपनी निर्मल वृत्ति, स्मृति व बुद्धि को मलिन करने की क्या जरूरत है?

पहला एंकरः- बिलकुल ठीक कहा आपने, कि निज आत्मस्वरुप से अपरिचित, एक भ्रमित आत्मविस्मृत अस्थिर बुद्धि इंसान की तरह, हमें अपनी गरिमा से गिर व अपने मन में एक दूसरे के प्रति बुरे भाव रखते हुए और वाणी और कर्म द्वारा उन बुरे भावों को अपने बुरे व्यावहारिक रूप द्वारा प्रकट करते हुए, अपना अनमोल मानव जीवन बरबाद करने की क्या जरुरत है?

दूसरा एंकरः- आखिर क्यों कर हम परमार्थ का रास्ता छोड़, स्वार्थपरता का अविचारयुक्त कंटक भरा रास्ता अपना अंत दुःखों को प्राप्त होना चाहते हैं? क्या हम यह नहीं जानते कि यह भूल केवल अपना ही नहीं वरन् आकाश आदि पंचभूतों से बने इस जगत यानि भौतिक सृष्टि का अमंगल करने जैसी धिक्कारनीय व विनाशकारी बात है?

पहला एंकरः- जी हाँ, क्या हम यह नहीं जानते कि इंसान का यह सांसारिक भयावह स्वाभाविक रूप, युगों से उसके मन में घर करता हुआ आज कलुकाल के अंतिम समय में चरम सीमा तक पहुँच चुका है और तकरीबन हर मानव इसका शिकार हो, अचेतन हो चुका है? यानि जड़ता को मान्यता दे, भौतिक पथ पर आगे बढ़ते हुए, ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त करने की होड़ में रत हो इंसान मिथ्याचारी बन चुका है। क्या कभी विचार किया है कि इसके दुष्प्रभावों से क्या हो रहा है?

दूसरा एंकरः- जानो ऐसे आत्मविस्मृत जड़ बुद्धि इंसानों के कुकर्मों अधर्मों से प्राप्त होने वाले बुरे कर्मों के प्रभाव से भारत माता पर इतना बोझ हो गया है कि वह उस बोझ में दबी हुई जारोजार रो रही है। तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

दुनियां वाले इन्सान बिगड़ गए, बिगड़ गई प्रजा ओ सारी।
बिगड़ गया दुनियां दा राजा, बिगड़े ओ खलकत सारी।।
कहने का आशय यह है कि
धर्म छोड़े इंसान ओ सारे, धर्म छोड़े ओ सृष्टि सारी
विपत्ति खरीद लई ओन्हां ने, हो गए आपस विच शिकारी

पहला एंकरः- स्पष्ट शब्दों में कहें तो कहने का तात्पर्य यह है कि चारित्रिक व नैतिक उत्थान जो कि आत्मिक ज्ञान का विषय है, उस ज्ञान के अभाव के कारण ही अधिकतर मानव आज अपनी अजर-अमर नित्य अवस्था व उसके सामर्थ्य से अनभिज्ञ हो अपने जीवन में प्रतिपल घटने वाली घटनाओं व उनसे उत्पन्न होने वाली अवस्थाओं यानि जन्म-मरण, रोग-सोग, ख़ुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-ग़रीबी, सुख-दुःख आदि में बौद्धिक संतुलन नहीं बना पा रहे जिससे उनके जीवन में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। जानो मानव समाज के पतित अवस्था को प्राप्त होने का यही एकमात्र कारण है क्योंकि आज तकरीबन हर मानव सत्य धर्म का निष्काम मार्ग छोड़ असत्य व अधर्म के रास्ते पर इस तरह आगे बढ़ रहा है कि उसे अंत प्राप्त होने वाले भयावह परिणाम की खबर ही नहीं है। जानो यह सर्वविनाश का रास्ता है।

दूसरा एंकरः- इस सर्वनाश से बचने हेतु यह याद रखने की आवश्यकता है कि समस्त भौतिक उपलब्धियाँ हमें क्षणिक सुख अवश्य प्रदान कर सकती हैं परन्तु वास्तव में इनकी प्राप्ति की कामना व होड़ मानव मन व बुद्धि को चंचल बना इस तरह से अशांत कर देती है कि फिर मानव इन सांसारिक विषयों में रागग्रस्त हो, हृदय में स्थित सत्य स्वरूप ईश्वर को पहचानने व सुनने के योग्य ही नहीं रहता। इस तरह मानव अपनी जन्मजात सम अवस्था खो बैठता है और कुदरत प्रदत्त विवेक बुद्धि रूपी विशेषगुण का स्थिरता व ध्यान पूर्वक प्रयोग करने में तथा निज मानव धर्म को थामे रख पाने में असक्षम हो जाता है।

पहला एंकरः- अतः आज आवश्यकता है राग-द्वेष ग्रस्त प्रत्येक इंसान को समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सत्यता से आत्मिक ज्ञान प्रदान कर, तद्नुकूल ढालने की ताकि उसकी बौद्धिक समता व संतुलन भंग न हो और वह परस्पर आत्मीयता अनुरूप सजनता का व्यवहार करते हुए मानवीय चारित्रिक पराकाष्ठा को छू, श्रेष्ठता के उच्चतम स्तर पर विराजमान हो सके। कुछ ऐसे ही भावों को अभिव्यक्त कर रही है हमारी अगली प्रस्तुति समभाव से हटते हैं राग और द्वेषः-

समभाव से हटते हैं राग और द्वेष
सजन भाव से हटते हैं वैर और विरोध

राग किससे होता है ?
जो भी प्रिय लगे।

द्वेष किससे होता है ?
जो अप्रिय लगे।

अरे निंदा किसकी करते हो .. ओ .. ओ..
निंदा उसकी करते हैं, जिससे द्वेष बने।

आपस में क्यों लड़ते हो? कुछ तो हम से कहो ...
राग से आ जाता है द्वेष, द्वेष से वैर-विरोध
वैर-विरोध है जिससे होता, उसी से लड़ते हैं।

समभाव लाना है
राग - द्वेष हटाना है।
सजन भाव अपनाना है
वैर- विरोध मिटाना है।

दूसरा एंकरः- यह सब सूक्ष्मतया जानने व समझने के पश्चात् सजनों हमारे लिए यह विचार करना बनता है कि ईश्वर की कृपा से, जो यह अनमोल मानव चोला, जन्म-जन्मांतरों के दुःख भोगने के पश्चात्, हर सत्य पथ से भ्रष्ट जीव को प्राप्त होता है, वह उस पथभ्रष्ट भौतिकवादी इंसान को, पुनः आदि-अनादि व परमादि काल से चले आ रहे, उस अपरिवर्तनीय शाश्वत यथार्थ ज्ञान को समय पर ही यथा प्राप्त कर पाने के लिए, एक विशेष शक्ति प्रदान करता है। जो भी समझदार इंसान इस मानसिक शक्ति को विधिवत् नियमित ढंग से प्रयोग कर पाने का उद्यम दिखाता है, वह सदा सत्य ही धारता है, असत्य कभी नहीं क्योंकि इसके सद्-प्रभाव से उसमें अच्छे-बुरे का ज्ञान बना रहता है और वह विवेकशील इस जगत में केवल वही करता है जो मानवता के सिद्धान्त अनुसार सर्वहित के लिए करने योग्य हो।

पहला एंकरः- यही नहीं इस विवेकशक्ति के बल पर वह सद्बुद्धि इंसान कभी भी भौतिकवादी 'मैं-मेरा' युक्त स्वार्थपर नजरिया अपना कर, न करने योग्य धर्म विरुद्ध कार्य नहीं करता। तभी तो वह विवेकी इंसान बुद्धिमान व न्यायशील कहलाता है जो अपने आप में सत्-पुरुष यानि सजन पुरुष बनने जैसी सर्वोत्तम बात होती है। इस प्रकार उस सत्यदर्शी यानि सत्य और असत्य का विवेक रखने वाले इंसान के मन में नश्वर भाव त्याग कर नित्यता का भाव धारण करने की उमंग व उत्साह पैदा होता है। इस शुभ परिवर्तन के पश्चात् मन को जगत से आजाद रह, हर क्षण सत्य स्वरूप परमात्मा में लीन रहना ही भाता है।

दूसरा एंकरः- ऐसा होने पर इंसान के लिए अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, समर्पित भाव से अपनी सुरत को मूल प्रणव मंत्र, आद् अक्षर संग अखंडता से जोड़े रख पारमार्थिक सत्ता को ग्रहण कर सत्त्वगुणी बन व इस प्रकार अपने जन्मजात स्वभावों में ढल अपनी ही प्रकृति में अविचलित स्थित रहना अच्छा लगता है। ऐसा होने पर वह इन्सान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार कह उठता हैः-

ओ३म् दा ही मंत्र है, ओ३म् ही स्वतन्त्र है।
ओ३म् दे हिन चार वेद, छः शास्त्रां दा प्रकाश है।।

पहला एंकरः- बस फिर तो उस श्रेष्ठ आचरण करने वाले सदाचारी और धर्मात्मा के लिए संतोषी इंसान बन निर्भयता से इस मायावी जगत में विशेष रूप से विचरते हुए भी उससे निर्लेप रहना सहज हो जाता है। यह इंसान के मन की संकल्प रहित यानि अफुर अवस्था का परिचायक होता है। जानो ऐसे सद्बुद्धि व बलवान इंसान के लिए शास्त्र द्वारा बताए गए सत्य-धर्म के निष्काम पथ पर चलते

हुए अपने जीवन कर्त्तव्यों का समयबद्ध उचित ढंग से पालन कर पाने में किसी विध् भी कोई कठिनाई नहीं आती।

दूसरा एंकरः- इस प्रकार वह परमात्मा की साधना में लीन सत्य पुरुष अपने जीवन में केवल सात्विक आहार विचार, व्यवहार अपनाना सुनिचित करता है और ए विध् सतवस्तु में प्रवेश कर सतवादी बन जाता है। कहने का आशय यह है कि वह विचारवान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था में आ जीवन में अपने मन वचन कर्म द्वारा सत्यनिष्ठा से परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए जीवन में समभाव समदृष्टि के सबक को आत्मसात् करने के योग्य बन जाता है और ऐसा बनकर सर्व एकात्मा का अनुभव करते हुए अंत अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है। सजनों आज का आयोजन देखने-समझने के पश्चात् हमें भी यही करना है।

पहला एंकरः- कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए अब मैं शालीन व जया सजन जी से प्रार्थना करती हूँ, कि वे मंच पर आएँ और पाँचवें अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड के विषय में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

Performance Report

HUMANITYOLYMPIAD.ORG

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

AN INITIATIVE OF SATYUG DARSHAN TRUST(REGD.)

5TH INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD

About Us

To ensure upliftment of individuals, families and society at large by enriching them with moral and ethical values across the world, Satyug Darshan Trust (Regd.), Faridabad conducts "International Humanity Olympiad" every year. We are a group of young volunteers working selflessly for an enlightened and peaceful tomorrow.

Key Highlights

8L+	2500+	27K	20+	10L+
ATTEMPTS	SCHOOLS	TREES SAVED	STATES	PAGE VIEWS

HUMANITYOLYMPIAD.ORG

BEST PERFORMING STATES

Haryana	2,81,787
Punjab	1,29,463
Uttar Pradesh	1,02,468
Delhi	36,586
Chandigarh	34,734
Uttarakhand	27,421
Rajasthan	14,007
Assam	8,247

EDUCATIONAL BOARDS SUPPORT

LANGUAGES COVERED

A ENGLISH

अ HINDI

অ ASSAMESE

ਅ PUNJABI

أَلِف ARABIC

WINNERS

We believe that everyone who has contributed in any way to make this Olympiad a success is a winner. But here are some of the best performers of this edition

School Module

ANKUR
Class 5 - 8

Aman Kumar
DPS, Haridwar

Prize - Laptop

TARUVAR
Class 9 - 12

Jagriti Gupta
Suraj School, Rewari

Prize - Laptop

DRAKHAT
College

Punit Gupta
Rewari

Prize - Laptop

PUSHP
Open Category

Bharat Ahuja
Moradabad

Prize - LED TV

BEST PERFORMING SCHOOLS

- Govt. Senior Secondary School, Pau , Ludhiana
- Dyal Singh Public School, Sector-7, Karnal
- Jai Academy, Jhansi

PROCESS

8L+

Level 1

5K

Level 2

Winners

"The fact that this Olympiad is on Digital Platform ensures that it can easily be conducted on Smart Phones, Laptops and other gadgets."

Mr. Pawan Malhotra
Renowned Actor

IHO IN ACTION

"I really like humanity olympiad because it gives us a message about humanity which is very much important in today's time."

ARCHANA BISHT, DOON CONVENT SCHOOL, HALDWANI

IHO CELEBRATION

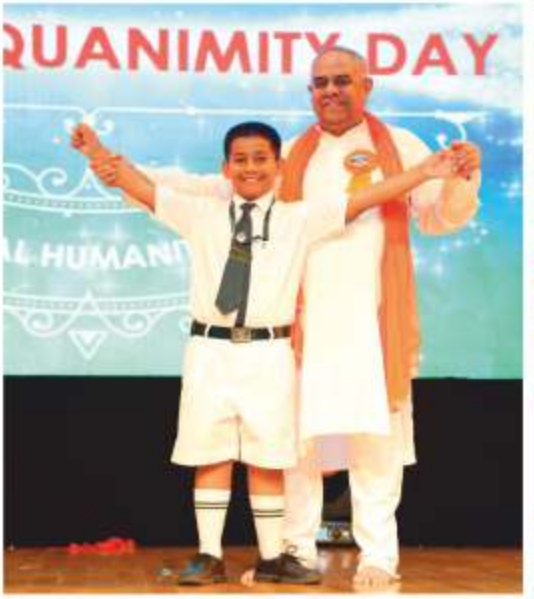

We express our sincere thanks to all the Principals, School Coordinators, Teachers-in-charge, the Education Departments of Chandigarh, Rajasthan, Haryana, Punjab, Uttarakhand, Assam & Uttar Pradesh, our Promoters, Volunteers, Media, Each and every student & individual who appeared for the exam and made 5th International Humanity Olympiad-2019 a success.

Make International Humanity Olympiad - 2020
even better by sharing your feedback at
bit.ly/humanityolympiadfeedback

+91-8968814154

info@humanityolympiad.org

humanityolympiad.org

#humanityolympiad

MAKING LEADERS OF TOMORROW BETTER HUMAN BEINGS TODAY

दूसरा एंकरः- भई वाह, आपकी अभूतपूर्व सफलता ने तो हम सबको हर्षित कर दिया। इसी प्रसन्नता में आओ मिलकर बोलें:-

हम एक हैं, हम एक हैं हम एक हैं,
एक दा है प्रवेश सजनों,
एक ही है विशेष सजनों एक हैं
हम एक हैं, हम एक हैं
इस परिचम के साए तले,
हम एक हैं
इस परिचम के साए तले,
हम एक हैं
हम एक हैं, हम एक हैं हम एक हैं,
एक दा है प्रवेश सजनों,
एक ही है विशेष सजनों एक हैं
हम एक हैं, हम एक हैं

हम एक हैं, हम एक हैं,

पहला एंकरः- अब हम प्रार्थना करेंगे श्री सजन जी से कि वे समभाव समदृष्टि के सबक़ नामक पुस्तक का विमोचन करें और साथ ही हमारे आज के चतुर्थ अंतर राष्ट्रीय मानवता ओलम्पियाड के विजेताओं व अतिथियों को परस्कृत कर उनका सम्मान बढ़ाएँः-

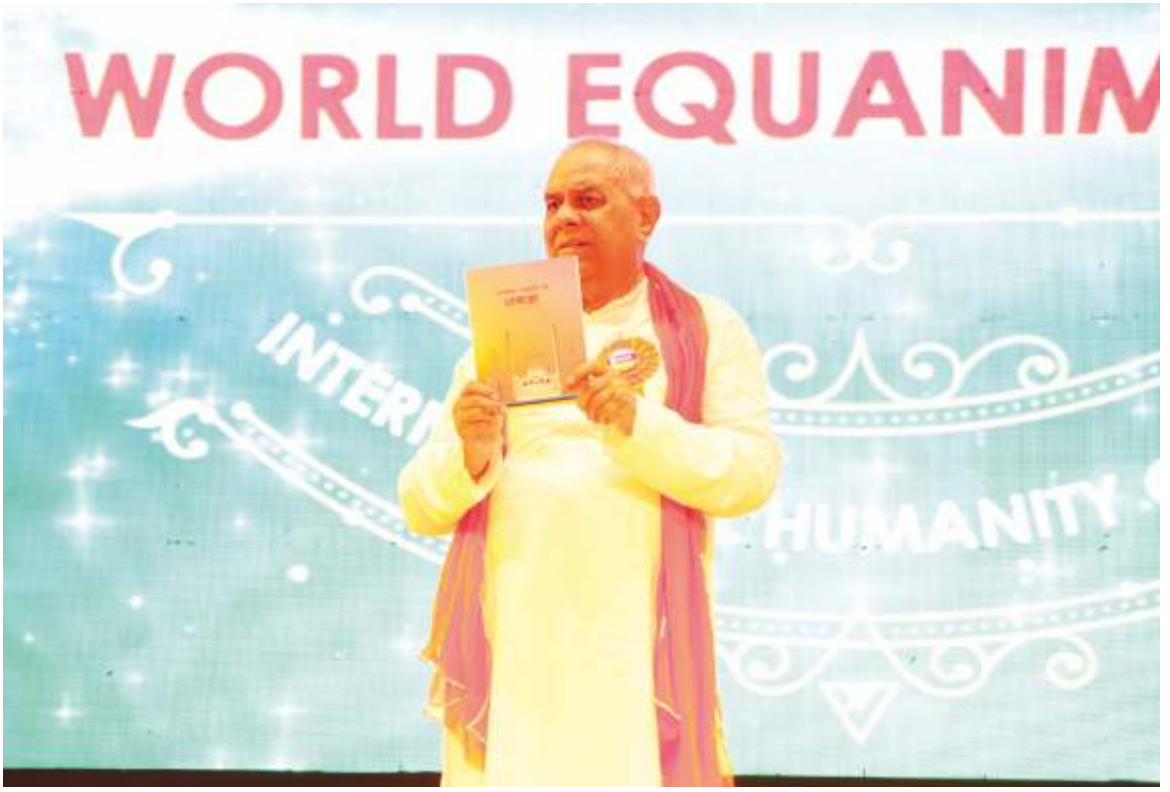

दूसरा एंकरः- भई वाह, आज का यह भव्य कार्यक्रम देख कर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हम तो यही कहेंगेः-

चन चढ़या सूरज होया जे उदय सजनों चन्न चढ़या
चन्न चढ़या कुल आलम देखे समभाव दी होसवे फतह ओ सजनों चन्न चढ़या।

पहला एंकरः- कार्यक्रम के अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि जीवन के परम पुरुषार्थों यथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सिद्ध करने के लिए आत्मज्ञानी बन समभाव अपनाना आवश्यक समझो और अपने मन को सदा संकल्प रहित अवस्था में साधे रखने के लिए परस्पर समदृष्टि अनुरूप आचार व्यवहार करना आरम्भ कर दो। इस प्रकार अपने गृहस्थाश्रम सतयुगी बना सतवस्तु में प्रवेश कर जाओ और अपना जीवन सकार्थ कर लो।

इन्हीं शब्दों के साथ सभी सजनों को जय सीता राम जी।

WORLD EQUANIMIT

WORLD EQUANIMITY DA

SATYUG DARSHAN TRUST
WORLD EQUANIMITY DAY

SATYUG DARSHAN TRUST

Media Coverage

करनाल केसरी | वीरवार THURSDAY 26 सितम्बर 2019

ऑनलाइन परीक्षा में पास होने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

दैनिक भास्कर | 27-Aug-2019 Page 4

अंतरराष्ट्रीय मानवता ओलंपियाड में 1.5 लाख बच्चों ने लिया भाग

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस व अंतर्राष्ट्रीय मानवता ई-ओलम्पियाड 2019 का पारितोषक वितरण समारोह

New Delhi, 24 August 2019

www.impressivetimes.com

Satyug Darshan Trust (regd.) organized 5th International Humanity Olympiad

Our Correspondent

Faridabad : International Humanity Olympiad conceived and promoted by "Satyug Darshan Trust" to evaluate the Humanity Quotient (HQ) in individual and to bring forth the innate Human Virtues is finding appreciation and encouragement from all walks of society across Globe. This 15 minutes introspective examination conducted on Digital Platforms at www.humanityolympiad.org is in received by the Olympiad last year - this year the Humanity Olympiad is being conducted in India, Australia, Japan, Kuwait and many European Countries. Minister of State for Social Jus... virtuous and righteous personality. This Year - The Olympiad has been divided into Screening and Mains Phase. More than 7.5 lakh individuals have already attempted the Screening phase ... participants, the winners of this campaign would also be felicitated with amazing prizes such as smartphones, e-gadgets etc. This free of cost Online Olympiad has touched and enhanced the lives of close to 45 lakh individuals, more than 3000 schools, saved close to 25K trees and strengthened the Digital India and Swatch Bharat Campaign in the past 4 years. Shortlisted candidates from the Screening Phase and Mains Phase will be felicitated with amazing prizes based on their performance.

अमर भारती

मनाया गया विश्व समभाव दिवस

उन्हें दवाइयां भी दीं। कालेज प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान नंद कुमार जैन, चेयरमैन सुखदेव राज जैन, सीनियर वाइस प्रधान विपिन कुमार जैन, उपप्रधान बांके बिहारी लाल जैन, सचिव राजीव जैन, सहायक सचिव अजय जैन, मैनेजर धर्मकीर्ति जैन, सविंदर जैन ने समूह स्टाफ के प्रयत्नों की प्रशंसा की और भविष्य में ऐसे कैंपस का आयोजन करते रहने को प्रेरित किया।

मानवता ओलंपियाड में विद्यार्थियों ने दिखाई काबिलियत

मानवता ओलंपियाड में हिस्सा लेते विद्यार्थी।

लुधियाना (संजीव): सतयुग दर्शन ट्रस्ट फरीदाबाद की तरफ से ह्यूमैनिटी डिवेलपमेंट क्लब के तले विभिन्न शहरों में मानवता ओलंपियाड का आयोजन किया गया, जिसका मकसद मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करना है। इसके तहत संस्था द्वारा दो स्तरों पर परीक्षा करवाई गई, जिसमें लुधियाना के 200 से अधिक स्कूलों व कालेजों से डेढ़ लाख से ज्यादा बच्चों ने हिस्सा लिया। लुधियाना के को-ऑर्डिनेटर अरुण भाटिया, सीनू ढींगरा और विजय डालम ने बताया कि ओलंपियाड के पहले स्तर की परीक्षा 15 अप्रैल से 10 अगस्त के दरमियान ली गई, जिसमें 90 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों ने 15 से 16 अगस्त को मुख्य परीक्षा में हिस्सा लिया। इसके बाद 18 अगस्त से 1 सितंबर तक प्रतिभागी विद्यार्थियों के लिए एक कैंपेन चलाया जा रहा है।

रेवाड़ी-नारनौल-महेन्द्रगढ़ | 14 जुलाई, 2019 | रविवार

विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा व संस्कारों के प्रति जागरूक करना आवश्यक

रेवाड़ी, शांति सैनी (पंजाब केसरी) : जिले के गांव बुढ़ौली स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में माता सावित्रीबाई फुले सदन के तत्वावधान में सतयुग दर्शन ट्रस्ट फरीदाबाद के स्वयंसेवकों आकांक्षा बहल, सन्नी बहल एवं आंचल सहगल के सौजन्य से मानवीय मूल्यों पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य राजकुमार यादव ने की।

प्राचार्य राजकुमार ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ नैतिक शिक्षा एवं सुसंस्कारों के प्रति जागरूक करना अति आवश्यक है। इस अवसर पर प्रवक्ता हिंदी राजेश, हीना शर्मा, सुदीप सिंह, रविन्द्र सिंह एवं सुशिला देवी सहित समस्त स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। मंच संचालन अल्पना प्रवक्ता जीव विज्ञान ने किया। प्राचार्य द्वारा सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। वरिष्ठ प्रवक्ता पुरुषोत्तम कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मानवता-ई-ओलम्पियाड-2019 के परिणाम भी किए घोषित

सोहना, चंडीगढ़, फिरोजपुर झिरका 5

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मानवता-ई-ओलम्पियाड-2019 के परिणाम भी किए घोषित

हिन्दुस्तान विज़न

Saturday September 14 2019

भारत दर्शन

FARIDABAD

फरीदाबाद, शनिवार, 7 सितम्बर, 2019

सतयुग दर्शन ट्रस्ट में विश्व समभाव दिवस आज

मानवता-ई-ओलंपियाड के पुरस्कारों का भी होगा वितरण

ग्लोबल टुडे

सतयुग दर्शन वसुन्धरा में धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

सोहना, चंडीगढ़, फिरोजपुर झिरका 5

धूमधाम से मनाया जाएगा विश्व समभाव दिवस

मानवता ई-ओलंपियाड के विजेताओं को किया जाएगा सम्मानित

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर मना समभाव दिवस

कैपिटल ज़ोन

समारोह में विजेताओं को किया जाएगा सम्मानित

आत्मिक ज्ञान अपनाने की महत्ता के विषय में डाला जाएगा प्रकाश

सतगुरु दर्शन ट्रस्ट ने किया सम्मानित

अमर भारती

रविवार, 08 सितम्बर 2019

सतयुग दर्शन वसुन्धरा में मनाया विश्व समभाव दिवस

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

यमुनानगर भास्कर

विश्व समभाव दिवस पर डॉ. एमके सहगल को किया सम्मानित

बिलासपुर | सतगुरु दर्शन ट्रस्ट फरीदाबाद ने विश्व समभाव दिवस पर शहर के श्रीसिद्धि विनायक एजुकेशनल ट्रस्ट के संस्थापक डॉ. एमके सहगल को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्हें ये पुरस्कार मानवता के विकास के लिए किए उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया गया। वाईएमसीए यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. सुनील गर्ग, सरस्वती शुगर मिल के सीईओ एवं सतगुरु दर्शन ट्रस्ट के चेयरमैन एसके सचदेवा मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. एमके सहगल ने कहा कि मानवता का अर्थ दूसरों के दुख-दर्द में शामिल होना है।

दैनिक खबरें

मानवता ओलम्पियाड में जिले के 18 विद्यार्थी, 5 प्रिंसिपल और 10 अध्यापक हुए सम्मानित

World Equanimity Day celebrated

हिन्दुस्तान

एसआर के प्रत्यूष को तीसरा स्थान

बरेली। एसआर इंटरनेशनल स्कूल के प्रत्यूष सिद्धू ने पांचवे इंटरनेशनल ह्यूमेनिटी ओलंपियाड में देश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। सतयुग दर्शन ट्रस्ट की ओर से पांचवे अंतरराष्ट्रीय ह्यूमेनिटी ओलंपियाड का आयोजन तीन चरणों में ऑनलाइन किया गया। सात सितंबर को समता दिवस पर प्रत्यूष को फरीदाबाद में सम्मानित किया जाएगा। एमडी रूमा गोयल ने कहा कि एसआर के छात्र सफलता का परचम लहरा रहे हैं।

निमंत्रण

दिनांक 7 सितम्बर 2019

पुरस्कार वितरण समारोह

विश्व समभाव दिवस - 7 सितम्बर

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

समभाव समग्र विश्व के प्रति एक सा नजरिया रखता है: सजन जी

शाह टाइम्स

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

हरियाणा में सम्मानित हुई अमरोहा की तनुष्का

अमरोहा। विश्व सद्भाव दिवस पर हरियाणा के फरीदाबाद में आयोजित इंटरनेशनल ह्यूमैनिटी ओलंपियाड में कैलसा क्षेत्र के गांव शाहपुर पैगंबरपुर निवासी कक्षा छह की छात्रा ने पूरे जिले का नाम रोशन किया। घनश्याम दास टंडन सरस्वती इंटर कॉलेज कैलसा में कक्षा छह की छात्रा तनुष्का बांगा पुत्री बिजेंद्र सिंह बांगा ने भी प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया था। उसे ओलंपियाड में विशेष पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। तनुष्का की उपलब्धि से परिजनों व शिक्षकों में खुशी का माहौल है।

सतयुग दर्शन वसुन्धरा पर धूमधाम से मनाया गया समभाव दिवस

विश्व सद्भाव दिवस पर वल्ल फरीदाबाद में इंटरनेशनल ह्यूमैनिटी ओलम्पियाड में प्रथम से चयनित होकर अमरोहा जनपद का नाम रोशन किया।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES
Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA
Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH
B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY
UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH
World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA
Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org

SATYUG GRAM SHIKSHA KENDRA
Aimed to upgrade the education levels of the downtrodden children of weaker sections of the society through after-school study classes, and creating livelihood opportunities for out-of-school children by setting up Vocational Training Centers.

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org